वर्ष 24, अंक 278, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 15 अप्रैल 2025 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कांग्रेस शासित कर्नाटक- हिमाचल में लोग ठगा हुआ महसूस कर रहे

हरियाणा से अयोध्या की सीधी उड़ान

इन प्रमुख परियोजनाओं का पीएम मोदी ने किया शुभारंभ

यमुनानगर

यमुनानगर के कैल गांव में दीनबंधु छोटू राम थर्मल पावर प्लांट में 800 मेगावाट की अल्ट्रा-क्रिटिकल आधुनिक इकाई की आधारशिला रखने के बाद एक सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हरियाणा में भाजपा की डबल इंजन सरकार की डबल स्पीडह्व देखी जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कहा कि 2014 से पहले जब कांग्रेस सत्ता में थी तो ब्लैकआउट होते थे, लेकिन पिछले दशक में भारत का उत्पादन दोगुना हो गया है और वह बिजली का निर्यात कर रहा है।

यमुनानगर के कैल गांव में दीनबंधु छोटू राम थर्मल पावर प्लांट में 800 मेगावाट की अल्ट्रा-क्रिटिकल आधुनिक इकाई की आधारशिला रखने के बाद एक सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हरियाणा में ह्वभाजपा की डबल इंजन सरकार की डबल स्पीडह्व देखी जा रही है। इस परियोजना का निर्माण भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (इलएच) द्वारा ?7272.06 करोड़ की लागत से किया जाएगा। हरियाणा पावर जनरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड ने कहा कि कुल परियोजना लागत ?8469.12 करोड़ है।

मोदी ने कहा, "कांग्रेस मॉडल पूरी तरह झूठ साबित हुआ है क्योंकि यह केवल सत्ता (जीतने) पर केंद्रित है। भाजपा मॉडल सत्य पर आधारित है।" उन्होंने कहा, "कांग्रेस शासित राज्यों में लोगों को धोखा दिया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में लोग परेशान हैं क्योंकि सभी विकास कार्य ठप हैं, जबकि कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के तहत बिजली से लेकर दूध तक सब कुछ महंगा हो रहा है।"

233 एकड़ में फैली और लगभग 8,470 करोड़ रुपये की लागत वाली थर्मल पावर यूनिट के मार्च 2029 तक चालू होने की उम्मीद है। इससे हरियाणा की ऊर्जा आत्मनिर्भरता को काफी बढ़ावा मिलेगा और पूरे राज्य में निर्बाध बिजली आपूर्ति होगी। गोबरधन (गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सेज धन) के विजन को आगे बढ़ाते हुए, मोदी ने मुकरबपुर में एक संपीड़ित बायोगैस संयंत्र की आधारशिला रखी।

2027 तक पूरा होने वाले इस संयंत्र की वार्षिक उत्पादन क्षमता 2,600 मीट्रिक टन होगी और यह जैविक अपशिष्ट प्रबंधन में मदद करेगा, साथ ही स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देगा।

गरीबों से होने वाली लूट वक्फ कानून के बाद होगी बंद- पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हरियाणा के हिसार में एक रैली को संबोधित कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी हिसार एयरपोर्ट का उद्घाटन करने पहुंचे हैं जहां उन्होंने कांग्रेस पार्टी पर भी निशाना साधा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस वोट बैंक का वायरस फैला रही है।

वक्फ कानून पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह कांग्रेस पार्टी की देन है जिसे मुसलमान का नुकसान हुआ था। वक्त कानून के नाम पर गरीबों से लूट की गई जो अब नए कानून के जरिए बंद हो जाएगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह भी कहा है कि कांग्रेस की नीतियों के कारण ही एससी और एसटी समुदाय पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

हिसार

वाणिज्यिक उड़ानें शुरू में हिसार और अयोध्या के बीच सप्ताह में दो बार और जम्मू, अहमदाबाद, जयपुर और चंडीगढ़ के लिए सप्ताह में तीन बार संचालित होंगी। यह उद्घाटन अंबेडकर जयंती के अवसर पर हुआ और यह विकास पहलों के व्यापक सेट का हिस्सा है जिसका अनावरण प्रधानमंत्री राज्य की अपनी यात्रा के दौरान कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिसार हवाई अड्डे पर एक नए टर्मिनल भवन की आधारशिला रखी और हिसार से अयोध्या के लिए पहली वाणिज्यिक उड़ान को हरी झंडी दिखाई, जो हरियाणा के नागरिक उड्डयन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। वाणिज्यिक उड़ानें शुरू में हिसार और अयोध्या के बीच सप्ताह में दो बार और जम्मू, अहमदाबाद, जयपुर और चंडीगढ़ के लिए सप्ताह में तीन बार संचालित होंगी। यह उद्घाटन अंबेडकर जयंती के अवसर पर हुआ और यह विकास पहलों के व्यापक सेट का हिस्सा है जिसका अनावरण प्रधानमंत्री राज्य की अपनी यात्रा के दौरान कर रहे हैं।

हिसार एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का शिलान्यास करने के बाद जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि जब भाजपा ने मुझे हरियाणा का दायित्व सौंपा तो मैंने अपने कई साथियों के साथ मिलकर यहां काम

किया। उनकी मेहनत ने हरियाणा में भाजपा को मजबूती दी है और मुझे गर्व है कि भाजपा 'विकसित हरियाणा, विकसित भारत' के सपने को पूरा करने के लिए बेहद गंभीर है और काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आज संविधान निमार्ता डॉ. बीआर अंबेडकर की जयंती है। उनका जीवन और संदेश हमारी सरकार की 11 साल की यात्रा का प्रेरणा स्तंभ बन गया है। हमारा हर दिन और हर योजना उन्हें समर्पित है। पिछड़ों, दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के जीवन में बदलाव लाना और उनके सपनों को पूरा करना हमारा मिशन है।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि कांग्रेस ने डॉ. बीआर अंबेडकर के साथ क्या किया। उन्होंने बार-बार उनका अपमान किया, उन्हें दो बार चुनाव हारने दिया और उन्हें सिस्टम से बाहर रखने के लिए उनके खिलाफ साजिश रची। कांग्रेस ने हमेशा डॉ. बीआर अंबेडकर के विचारों को नष्ट करने की कोशिश की है। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि हमारी सरकार का हर निर्णय, हर नीति बाबा साहेब अंबेडकर के लिए प्रतिबद्ध है। इससे पहले एक्स पर पोस्ट करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि अम्बेडकर जयंती पर कल का दिन हरियाणा की विकास यात्रा को समर्पित रहेगा। सुबह करीब 10:15 बजे हिसार-अयोध्या के बीच कमर्शियल फ्लाइट का शुभारंभ और एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का शिलान्यास करूंगा। दोपहर बाद यमुनानगर में भी कई प्रोजेक्ट्स से जुड़ा कार्यक्रम है।

भारत नहीं आएगा मेहुल चोकसी?

गिरफ्तार हुए, लेकिन मिल जाएगी बेल- वकील

नई दिल्ली : पंजाब नेशनल बैंक में 13,000 करोड़ रुपये के धोखाधड़ी मामले में मेहुल चोकसी को बेल्जियम में गिरफ्तार किया गया. भगोड़े मेहुल चोकसी के खिलाफ केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के प्रत्यर्पण अनुरोध के आधार ये कार्रवाई की गई. भारतीय जांच एजेंसियां उसे जल्द ही वापस भारत लाने की तैयारी में जुटी हुई है. इस बीच मेहुल चौकसी के वकील विजय अग्रवाल ने कहा कि वह इस गिरफ्तारी के खिलाफ अपील दायर करने की प्रक्रिया शुरू करने वाले हैं.

'गिरफ्तार हुए, लेकिन मिल जाएगी बेल'

न्यूज एजेंसी एएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक मेहुल चौकसी के वकील ने कहा कि अगर उन्हें भारत प्रत्यर्पित किया जाता है तो यह उनके मानवाधिकार का उल्लंघन होगा. उन्होंने कहा, "यह किसी भी देश की प्रक्रिया होती है. यदि कोई देश दूसरे देश को रिक्वेस्ट करती है तो औपचारिक तौर पर गिरफ्तारी होती है और फिर उसकी बेल भी दी जाती है. उसके बाद प्रत्यर्पण को चुनौती दी जाती है." इस दौरान उन्होंने संजीव भंडारी केस का भी हवाला दिया.

'इतनी आसानी से हो सकता प्रत्यर्पण'

विजय अग्रवाल ने कहा, "संजीव भंडारी का केस हारने के बाद भारत सरकार के लिए यह बहुत मुश्किल हो गया है. मुझे नहीं लगता है कि प्रत्यर्पण इतनी आसानी से हो सकता है."

उन्होंने दावा किया कि मेहुल को भगोड़ा घोषित नहीं किया गया है, क्योंकि वह भारतीय जांच एजेंसी के साथ सहयोग करते रहे हैं।

मोइरांग में ऐतिहासिक ध्वजारोहण की 81वीं वर्षगांठ, राज्यपाल अजय भल्ला ने कार्यक्रम को किया संबोधित

मोइरांग

14 अप्रैल, 1944 को, क्ठअ के कर्नल शौकत अली मलिक ने पहली बार मोइरांग में भारतीय भूमि पर आजाद हिंद फौज का तिरंगा झंडा फहराया, जिससे भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हो गया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के दूरदर्शी नेतृत्व में इस कृत्य ने प्रतिरोध की ज्वाला प्रज्वलित की और साहस और बलिदान के प्रतीक के रूप में राष्ट्रीय स्मृति में अंकित है।

इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) शहीद स्मारक पर मणिपुर के मोइरांग में ऐतिहासिक ध्वजारोहण की 81वीं वर्षगांठ मनाई गई, जिसने ब्रिटिश शासन से भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण अध्याय को चिह्नित किया।

मणिपुर के राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मोइरांग ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त घोषित होने वाला पहला क्षेत्र था। यह केवल प्रतीकात्मक नहीं था। यह दुनिया के लिए एक साहसिक घोषणा थी कि भारत उठेगा, अपनी स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करेगा, और साहस में एकजुट होगा।

बम से उड़ा देंगे कार और घर

सलमान खान को मिली जान से मारने की धमकी

मुंबई

अब तक इस धमकी की जिम्मेदारी किसी ने नहीं ली है। सलमान खान और उनके परिवार ने अबतक किसी तरह का बयान जारी नहीं किया है। एक्टर के फैंस भी इस जानकारी के समाने आने के बाद परेशान हो गए है। फैंस अपने पसंदीदा स्टार की सेहत के लिए परेशान हो गए है। सलमान खान को इससे पहले भी कई बार धमकी मिल चुकी है।

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान को एक बार फिर से जान से मारने की धमकी मिली है। मुंबई के वर्ली स्थित परिवहन विभाग के वॉट्सएप नंबर पर एक्टर को जान से मारने की धमकी मिली है। इस

धमकी भरे मैसेज में सलमान खान को घर में घुसकर मारने की धमकी दी है। सलमान खान की कार को बम से उड़ाने की धमकी भी दी गई है। मैसेज भेजने वाले की पहचान नहीं हुई है। पुलिस ने अज्ञात शख्स के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

अब तक इस धमकी की जिम्मेदारी किसी ने नहीं ली है। सलमान खान और उनके परिवार ने अबतक किसी तरह का बयान जारी नहीं किया है।

एक्टर के फैंस भी इस जानकारी के समाने आने के बाद परेशान हो गए है। फैंस अपने पसंदीदा स्टार की सेहत के लिए परेशान हो गए है। सलमान खान को इससे पहले भी कई बार धमकी मिल चुकी है। गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ की तरफ से कई कई बार धमकियां मिल चुकी है।

राष्ट्रपति के लिए समयसीमा, सुप्रीम कोर्ट के फैसले को चुनौती दे सकती है केंद्र

नई दिल्ली

यह स्पष्ट नहीं है कि पुनर्विचार याचिका किस बात को चुनौती देगी। यह नहीं बताया गया कि केंद्र सरकार तय की गई समयसीमा की समीक्षा की मांग करेगी या राष्ट्रपति के पूर्ण वीटो को खत्म करने की। यह इस आधार पर भी पुनर्विचार की मांग कर सकती है कि केंद्र को मामले में अपनी दलीलें रखने का मौका नहीं मिला।

राज्यपालों और राष्ट्रपति के लिए राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी देने की समयसीमा तय करने वाले सुप्रीम कोर्ट के फैसले को केंद्र सरकार चुनौती दे सकती है। तमिलनाडु राज्य बनाम राज्यपाल मामले में 8 अप्रैल को आए फैसले ने एक तरह से राष्ट्रपति की शक्तियों को भी सीमित कर दिया। सूत्रों के अनुसार केंद्र एक समीक्षा याचिका दायर करने की योजना बना रहा है। इस फैसले के साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपालों द्वारा भेजे गए विधेयकों पर राष्ट्रपति के लिए तीन महीने की समय-सीमा तय कर दी है। यह एक तरह से राष्ट्रपति की "पूर्ण वीटो" की शक्ति को छीन लेता है। तमिलनाडु मामले में फैसला न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति आर. महादेवन की दो न्यायाधीशों वाली पीठ ने सुनाया।

बड़े बदलाव के मूड में कांग्रेस, प्रियंका को पार्टी का उपाध्यक्ष बनाया जा सकता है

यूपी

प्रियंका गांधी वाड्रा पर्दे के पीछे से अहम भूमिका निभा रही हैं, भले ही वे वर्तमान में महासचिव के पद पर हैं, लेकिन उनके पास कोई खास संगठनात्मक प्रभार नहीं है। उनके सबसे उल्लेखनीय हालिया योगदानों में से एक गुजरात से शुरू होने वाले जिला अध्यक्षों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक पायलट परियोजना का खाका तैयार करना है। कांग्रेस द्वारा संगठन में प्रियंका गांधी वाड्रा की भविष्य की भूमिका पर जल्द ही निर्णय लिए जाने की उम्मीद है, क्योंकि पार्टी उपाध्यक्ष के पद पर उनकी संभावित पदोन्नति को लेकर आंतरिक चचाएं जोर पकड़ रही हैं। पार्टी सूत्रों के अनुसार, प्रियंका गांधी वाड्रा पर्दे के पीछे से अहम भूमिका निभा रही हैं, भले ही वे वर्तमान में महासचिव के पद पर हैं, लेकिन उनके पास कोई खास संगठनात्मक प्रभार नहीं है। उनके सबसे उल्लेखनीय हालिया योगदानों में से एक गुजरात से शुरू होने वाले जिला अध्यक्षों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक पायलट परियोजना का खाका तैयार करना है। यह परियोजना, जो जिला-स्तरीय नेताओं को अधिक जिम्मेदारी और अधिकार देकर कांग्रेस के जमीनी ढांचे को मजबूत करने का प्रयास करती है, बाद में इसे अन्य राज्यों में भी दोहराया जा सकता है यदि यह गुजरात में सफल हो जाती है। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि प्रियंका की औपचारिक भूमिका पर चर्चा के साथ-साथ, कांग्रेस संगठन के भीतर व्यापक कार्यात्मक बदलावों की भी तैयारी कर रही है। आगामी चुनावी चुनौतियों से पहले पार्टी के कामकाज को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आंतरिक प्रणालियों और परिचालन दक्षता में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

अनुसूचित जाति वर्गीकरण लागू करने वाला पहला राज्य बना तेलंगाना

किस समूह को मिलेगा कितना आरक्षण

तेलंगाना

आदेश में कहा गया है कि तेलंगाना विधानमंडल के निम्नलिखित अधिनियम को 8 अप्रैल 2025 को तेलंगाना के राज्यपाल की स्वीकृति प्राप्त हुई और उक्त स्वीकृति को सर्वप्रथम 14 अप्रैल 2025 को तेलंगाना राजपत्र में सामान्य जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है। अनुसूचित जाति के वर्गीकरण पर सरकारी आदेश जारी होने का दिन भारतीय संविधान के निमार्ता अंबेडकर की जयंती के साथ मेल खाता है। आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, अनुसूचित जाति समुदायों को उनकी सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक स्थिति के आधार पर तीन समूहों में विभाजित किया गया हैः

देश में पहली बार तेलंगाना ने अनुसूचित जाति (एससी) वर्गीकरण के कार्यान्वयन पर सोमवार को एक सरकारी आदेश जारी किया, सिंचाई मंत्री एन उत्तम कुमार रेड्डी ने घोषणा की। राज्य सरकार ने पहले एससी वर्गीकरण पर सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति शमीम अख्तर के नेतृत्व में एक आयोग नियुक्त किया था, जिसने सिफारिशें की थीं कि 59 अनुसूचित जाति (एससी) समुदायों को सरकारी नौकरियों और शिक्षा में कुल 15 प्रतिशत आरक्षण के लिए क, कक और कक्क जैसे तीन समूहों में विभाजित किया जाना चाहिए।

आदेश में कहा गया है कि तेलंगाना विधानमंडल के निम्नलिखित अधिनियम

को 8 अप्रैल 2025 को तेलंगाना के राज्यपाल की स्वीकृति प्राप्त हुई और उक्त स्वीकृति को सर्वप्रथम 14 अप्रैल 2025 को तेलंगाना राजपत्र में सामान्य जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है। अनुसूचित जाति के वर्गीकरण पर सरकारी आदेश जारी होने का दिन भारतीय संविधान के निमार्ता अंबेडकर की जयंती के साथ मेल खाता है। आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, अनुसूचित जाति समुदायों को उनकी सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक स्थिति के आधार पर तीन समूहों में विभाजित किया गया हैः

15 आर्थिक और शैक्षिक रूप से वंचित समुदाय वाले समूह क को 1 प्रतिशत आरक्षण आवंटित किया गया है।

18 मध्यम रूप से लाभान्वित समुदाय वाले समूह-कक को 9 प्रतिशत कोटा मिलेगा।

26 अपेक्षाकृत समृद्ध अनुसूचित जाति समुदाय वाले समूह-III को 5 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा।

मीडिया को संबोधित करते हुए सिंचाई मंत्री एन. उत्तम कुमार रेड्डी ने घोषणा की कि सरकारी आदेश (जीओ) आज पहले ही जारी कर दिया गया था और मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी को सौंप दिया गया था। मंत्री ने कहा कहा कि इस समय से तेलंगाना में रोजगार और शिक्षा दोनों में एससी वर्गीकरण प्रभावी है।

सबके निर्माण में भारत राष्ट्र निर्माण की बात करते थें बाबासाहेब : प्रो. रीता बहुगुणा जोशी

- बाबासाहेब का सम्मान मोदी जी के आने के बाद हुआ : प्रो.रीता बहुगुणा जोशी
- प्रो.रीता बहुगुणा जोशी ने बाबासाहेब की मूर्ति पर माल्यार्पण करके नमन किया

अखंड भारत संदेश

बाबासाहेब की मूर्ति पर माल्यार्पण कर नमन करतीं प्रो. रीता जोशी

जसरा। बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेडकर क्या व्यक्ति थे, क्या व्यक्तित्व था, अनेकों भाषाओं के ज्ञाता, चार-चार पीएचडी करके दुनिया को दिखला दिया है कि अगर सुदृढ़ता की शक्ति और लक्ष्य हो तो सब कुछ हासिल किया जा सकता है। जब संविधान बनाना हुआ तो उसका अध्यक्ष बाबा साहब को बनाया गया। क्यों कि दुनिया के संविधानों का ज्ञान बाबा साहब को ही था। वह किसी धर्म जाति में भेद-भाव नहीं करते थे। उनके लिए 'हम सब भारत के लोग' ध्येय वाक्य था। बाबासाहेब का सबसे बड़ा सम्मान मोदी जी के आने के बाद हुआ। सबसे बड़ा पंचतीर्थ मोदी जी के आने के बाद बना। जिन्दाबाद जिन्दाबाद से काम नहीं चलेगा बाबासाहेब जैसे महापुरुषों के वारें में खासकर युवाओं को पढ़ना चाहिए क्योंकि हमारा राष्ट्र महान है। बाबासाहब जैसे महापुरुषों ने समता मूलक एवं न्याय प्रिय समाज के स्थापना के लिए जो संघर्ष किया हम सभी को अनंत काल तक प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। उक्त बातें इलाहाबाद लोकसभा की पूर्व सांसद प्रो.रीता बहुगुणा जोशी ने जसरा ब्लाक परिसर में भाजपा द्वारा आयोजित बाबासाहेब डा०भीमराव अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर मूर्ति में पुष्पांजलि और माल्यार्पण करने के बाद गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए कही। डा० जोशी ने आगे बताया कि आपने जो बोधिसत्व बाबा साहेब का नारा लगाया उसका मतलब है। जब सबका निर्माण हो जाए, तब मेरा निर्माण होगा। बाबासाहब डा० भीमराव अम्बेडकर सबके निर्माण में भारत राष्ट्र निर्माण की बात करते थे। जातिहीन समाज के लिए बात करते थें, डाँ. रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि बाबासाहब का कहना था कि मै अपनी लड़ाई नहीं लड़ रहा हूं, मैं अपने सम्मान की बात नहीं कर रहा हूं, मैं भारत राष्ट्र के सम्मान की बात कर रहा हूं। मैं समाज के उपेक्षित लोगों की बात कर रहा हूं। मैं समाजवादी व्यवस्था-समतावादी व्यवस्था की बात कर रहा हूं, मैं जातिहीन समाज के लिए बात कर रहा हूं, भारत का एक-एक वासिंदा का निर्माण होगा तो भारत का निर्माण होगा। अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जसरा जगत नारायण शुक्ला ने किया। संचालन रोजगार सेवक संदीप ने किया। इस अवसर पर भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, आशीष सोनकर प्रधान, भूपेन्द्र पाठक, राजकुमार, मोतीलाल, रामचंद्र सोनकर, बृजेश सोनकर, राकेश पाठक, दीपचंद्र गुप्ता आदि के साथ भारी संख्या में अनूसूचित जाति के लोग उपस्थित रहे।

प्यार में अंधे प्रेमी युगल को ग्रामीणों ने पकड़ कर पुलिस को सौंपा, थाने के मंदिर में हुई शादी

मऊआइमा। प्यार मोहब्बत में अंधे प्रेमी युगल को ग्रामीणों ने पकड़ कर पुलिस को सौप दिया पुलिस ने दोनों के परिजनों को थाने में बुलाया दोनो प्रेमी के परिजनों में घंटो पंचायत के बाद तय हुआ कि दोनों की शादी कर दी जाए। परिजनों के मौजदगी में थाना परिसर के बगल मंदिर में प्रेमी युगल शादी कर दी गई। जिस का चर्चा का विषय क्षेत्र में बन गया है।

प्रतापगढ़ के थाना रानीगंज के ग्राम पूरे हुलासी जामताली निवासी विपिन सिंह की रिश्तेदारी मऊआइमा के ग्राम छाता में है। विपिन सिंह प्रायः आते जाते छाता गांव की सुनीता देवी के प्रेम में इश्क कर बैठा।बताते हैं कि दोनों मोबाइल से प्रायःघंटों बातें करते थे और एकांत में मिलने लगे।इसकी चर्चा गांव में होने लगी। बताया गया है कि रविवार को विपिन सिंह और सुनीता देवी एकांत में मिलकर प्यार मोहब्बत की बातें कर रहे थे। ग्रामीणों ने दोनों को दबोच कर मऊआइमा पुलिस को सौंप दिया।थाने में दोनों शादी के जिद पर अड गए।पुलिस ने दोनों के परिजनों को बुलाया जहां दोनों पक्ष के परिजनों में घंटों पंचायत हुई। दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दोनों एक ही बिरादरी के हैं और बालिग हैं।और शादी करने को राजी हैं। इस प्रकार मऊआइमा थाना परिसर के मन्दिर में दोनों प्रेमी युगल एक दूसरे के गले में माला डाल कर भगवान को साक्षी मानते हुए शादी करके हमेशा के लिए एक दूजे के लिए हो गए।तथा मऊआइमा पुलिस को सुलहनामा भी दे दिया। पुलिस का कहना है कि दोनों बालिग हैं।और दोनों के परिजनों के मौजूदगी में शादी कर दी गई। जिस का का चर्चा की विषय बना हुआ है।

न्यूज झरोखा

हमारा संविधान हमारा स्वाभिमान के रूप में मनाई गई डॉ भीमराव अम्बेडकर की जयंती

मऊआइमा। सोमवार को प्राथमिक विद्यालय रानगर गंसियारी द्वितीय में बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी की जयंती हमरा संविधान हमारा स्वाभिमान के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर शिक्षकों छात्र छात्राओं ने संविधान रचयिता बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उनके जीवन तथा इनके द्वारा लिखे गए संविधान के बारे मे विस्तार से जानकारी दी गई।इस अवसर पर विधालय में शिक्षारत कक्षा पांच के छात्र केशव गौतम ने डाक्टर साहब की मूर्ति बना कर लाया जिसकी सभी ने सराहना की।और बच्चे के हुनर को प्रशंसा की।इस अवसर पर ग्राम प्रधान पुष्पा देवी,एस एम सी, अध्यक्ष सूफिया खातून, प्रधानाध्यापक मोहम्मद शफी सहित समस्त अध्यापक मौजूद रहे।

आदर्श इंटर कालेज में डॉ भीमराव अम्बेडकर की मनाई गई जयंती

मऊआइमा। मऊआइमा विकास खंड के घीन पुर गांव स्थित आदर्श इंटर कालेज में ज्ञान के प्रतीक भारत रत्न संविधान निमार्ता शोषितों के मसीहा बाबा साहब डॉ भीम राव अम्बेडकर जी की जयंती बड़े धूमधाम से मनाया गया ।इस अवसर पर प्रबन्धक दयाशंकर शुक्ल ,प्रधानाचार्य अमित गुप्ता की अध्यक्षता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।जिसका संचालन देवेन्द्र कुमार के द्वारा किया गया । कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रोग्राम कलाकारों एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया गया ।अतिथि के रूप में ग्राम प्रधान पूर्व प्रधान राम सजीवन पटेल एवं पूर्व प्रधान हटिया पप्पू दूबे , पूर्व प्रधान गोवर्धन पुर पृथ्वी पाल एंव समस्त विद्यालय के स्टाफ उपस्थित रहे।

परिवारिक बांटवारे को लेकर मार पीट पांच के खिलाफ एसीपी के आदेश पर मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। परिवारिक बंटवारे को लेकर एक परिवार में जम कर चले लाठी डंडो के दौरान कई जख्मी हुए है। एक पक्ष ने सात अप्रेल को मुकदमा दर्ज कराया था।दूसरे पक्ष का मुकदमा न दर्ज होने पर वह एसीपी फूलपुर के यहां इंसाफ की गुहार लगाई। एसीपी के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने पांच के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम अलावलपुर तिलहरा निवासनीय सरोजा देवी पत्नी राकेश कुमार यादव का आरोप है कि घरेलू बंटवारे को लेकर सात अप्रैल को उसके परिवार के ही लोग लाठी डंडा लेकर घर में घुस कर उसे और उसके पति और पुत्र धीरेन्द्र कुमार को मार पीट कर बेहोश कर दिए थे तथा गृहस्थी का सामान क्षतिग्रस्त कर दिए थे। सरोजा देवी का आरोप है कि घटना वाले दिन सात अप्रैल को उसके विपक्षी का मुकदमा लिख लिया गया था। परन्तु उसका मुकदमा नहीं दर्ज किया गया था। एसीपी फूलपुर के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने सरोजा देवी की तहरीर पर परिवार के राजेश कुमार,कंचन देवी,सोनी देवी, अनिल कुमार मंजू देवी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया। पुलिस मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

मनाया गया अग्निशमन सेवा स्मृति दिवस

कोरांव। 14 अप्रैल को अग्निशमन सेवा स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में डॉ आर के पांडेय सीएफओ कमिश्नरेट प्रयागराज के द्वारा फायर स्टेशन सिविल लाइन पर पुष्प अर्पित कर 02 मिनट का मौनधारण कर श्रद्धांजलि दिया गया। एवं अन्य समस्त 09 फायर स्टेशन नैनी मेजा बारा कोरांव हंडिया फूलपुर सोरांव व मा0 हाइकोर्ट पर भी अग्निशमन सेवा स्मृति दिवस मनाया गया। इसके पश्चात अग्निशमन वाहनों को जनपद में प्रचार प्रसार हेतु राजेश कुमार अग्निशमन अधिकारी के नेतृत्व में रवाना किया गया, अवध नारायण अग्नि शमन द्वितीय अधिकारी द्वारा नगर में प्रमुख चौराहों पर प्रचार प्रसार का कार्य किया गया एवं सभी तहसील स्तर के फायर स्टेशन, नैनी हंडिया, फूलपुर, सोरांव,करछना, मेजा, बारा, कोराव, द्वारा प्रत्येक तहसील में किया गया इसके बाद अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज जोन, प्रयागराज, पुलिस आयुक्त कमिश्नरेट प्रयागराज, पुलिस उपायुक्त नगर प्रयागराज को अग्नि सुरक्षा स्मृति दिवस पर पिन फ्लैग लगाया गया।

बाबा साहब ने शोषित वंचित समाज को दिया एक नई दिशा : सोमदत्त सिंह

सपाइयों ने पार्टी कार्यालय में मनाया आंबेडकर जयंती समारोह

कोरांव। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के दिशा निर्देश पर पार्टी कार्यालय कोरांव में सोमदत्त सिंह पटेल विधानसभा अध्यक्ष एवं जिला पंचायत सदस्य प्रयागराज के नेतृत्व में जयंती समारोह मनाया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित ललन सिंह पटेल ने कहा कि बाबा साहब भीमरांव अंबेडकर दलित पिछड़ा शोषित वंचित समाज के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करते हुए उनको न्याय दिलाने का कार्य किया उनके बताए पदचिन्हों पर चलना ही बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। समारोह का नेतृत्व कर रहे सपा नेता सोमदत्त सिंह पटेल ने कहा कि समाज को गुलामी और भेदभाव को बेड़ियों से बाहर निकालने का कार्य किया बाबा साहब ने समाज को शिक्षित करने के उद्देश्य से कहा कि शिक्षा शेरनी का वह दूध है जो पियेगा वही दहाड़ेगा दलितों के अधिकारों का हनन ना होने पाए इसके लिए संविधान के रूप में वरदान दिया। समारोह में बतौर अध्यक्ष रामदेव निडर पूर्व प्रत्याशी ने कहा कि बाबा साहब के द्वारा किए गए कार्य अविस्मरणीय है और समाज हित में किए गए योगदान को नहीं भुलाया जा सकता।कार्यक्रम का संचालन रविंद्र जैसल जाटव महासचिव ने किया।उक्त मौके पर मुख्य रूप से राजेश पांडे जिला उपाध्यक्ष सुमन कोल जिला पंचायत सदस्य दिनेश पटेल जिला सचिव रामानुज यादव प्रधान मेहताब खान नगर अध्यक्ष राजकुमार आदिवासी प्रधान महेंद्र यादव प्रधान विनय सोनकर जिला सचिव मंगलदेव कोल त्रिवेणी यादव सीमा अंसारी धर्मराज पटेल नौशाद अंसारी,अजीज अहमद, राजेश यादव सोनू यादव लक्ष्मी शंकर पटेल ददुआ दीपक पटेल अश्वनी पटेल मंगला कोल आदि लोग उपस्थित रहे।

डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन

- विद्यालय के प्रबंधक तीर्थराज विश्वकर्मा ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचारधारा हैं, जो आज भी समाज को दिशा दे रही है

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। महान समाज सुधारक, भारतीय संविधान के शिल्पकार एवं भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर गयादीन विश्वकर्मा इण्टर कालेज, भिदिउरा, थरवई, प्रयागराज में एक विचारगोष्ठी एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं जनसामान्य को बाबा साहब के जीवन, संघर्ष और आदर्शों से अवगत कराना था।

कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। विद्यालय के प्रबंधक, प्रधानाचार्य, समस्त शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों ने मिलकर बाबा साहब को नमन किया और उनके जीवन मूल्यों को आत्मसात करने का संकल्प लिया।

संगोष्ठी सत्र में विद्यालय के शिक्षकों एवं अतिथियों ने डॉ. अंबेडकर के सामाजिक न्याय, समानता, शिक्षा और संविधान निर्माण में दिए गए अतुलनीय योगदानों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। वक्ताओं ने बताया कि किस प्रकार बाबा साहब ने दलितों, पिछड़ों, महिलाओं और वंचित वर्गों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी और एक समतामूलक समाज की स्थापना का सपना देखा। उनके द्वारा रचित भारतीय संविधान को विश्व के श्रेष्ठतम संविधानों में एक माना जाता है।

कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भी भागीदारी निभाई। विद्यार्थियों ने भाषण, कविता पाठ एवं विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ. अंबेडकर के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने शिक्षा, संघर्ष और सामाजिक समरसता को जीवन का मूल मंत्र बताया। विद्यार्थियों ने ₹जय भीम₹ के नारों के साथ वातावरण को ऊजार्वान बना दिया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं के साथ-साथ अभिभावकगण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यालय की इस पहल की सराहना की और बच्चों के चरित्र निर्माण हेतु इस प्रकार के आयोजनों को आवश्यक बताया।

कार्यक्रम के समापन पर विद्यालय के प्रबंधक तीर्थराज विश्वकर्मा ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचारधारा हैं, जो आज भी समाज को दिशा दे रही है। उन्होंने सभी छात्रों को बाबा साहब के सिद्धांतों पर चलने, शिक्षा को हथियार बनाने एवं समाज में समानता व भाईचारे की भावना विकसित करने का आह्वान किया।

संविधान शिल्पी बाबा साहेब की जयंती पर समाज को शिक्षित करने का संकल्प

- वीरकाजी गांव में धूमधाम के साथ मनाई गई अम्बेडकर साहेब की जयंती

अखंड भारत संदेश

वीरकाजी गांव में बाबा साहेब को पुष्प अर्पित कर जयंती मनाते हुए ग्रामीण

फूलपुर। संविधान शिल्पी बाबा साहेब की विचारधारा को अपनाते हुए उनके मिशन को पूरा करना हम सबका नैतिक कर्तव्य है। यह बातें सोमवार को फूलपुर क्षेत्र के वीरकाजी गांव में भारत रत्न डा बी आर अम्बेडकर की 134वीं जयंती पर नव स्थापित प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करने के बाद उपस्थित अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए आम्बेडकरवादी भाजपा नेता अशोक चौधरी ने कही। समाज को शिक्षित करने का संकल्प दिलाते हुए उन्होंने कहा की बाबा साहेब का कहना था की शिक्षा ही समाज को सही दिशा देने का काम करती है। राकेश कुमार ने बाबा साहेब के संघर्षों से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराते हुए कहा की बाबा साहेब का ध्येय ही शिक्षित एवं संगठित रहते हुए संघर्ष करने का था। इसलिए हमें यह प्रण करना है की हम एक रोटी कम खाएंगे पर अपने बच्चों को जरूर पढ़ाएंगे। सुरेन्द्र चौधरी ने कहा की देश बाबा साहेब के एहसानों को कभी भूल नहीं सकता। उनके दिए हुए संविधान की बदौलत ही आज हर वर्ग के लोगों को समानता का अधिकार मिला है। इस दौरान लोकगायक रामचन्द्र तुफानी व भजन गायक निगम गौतम ने गीतों के माध्यम से डा भीमराव अम्बेडकर के जीवन वृत्तांत को सुनाया।कार्यक्रम के आयोजक विनोद गौतम ने पत्नी शीला देवी के साथ आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। मौके पर कृष्णा गौतम, धर्मराज गौतम, राकेश कुमार, हरिओम प्रकाश, अजय कुमार दयाशंकर गौतम, विजय कुमार, राजाराम, रामसजीवन, ओपी भारतीया, गुलाब गौतम, बृजेश गौतम, सुबास चंद्र गौतम, सियाराम, रमेश गौतम, विनय, आकाश, एडवोकेट दिलीप आजाद, मो इमरान, रमेश गौतम, दिनेश, रोशन लाल, धर्मेन्द्र गौतम सहित सैकड़ों की संख्या में बाबा साहेब के अनुयायी मौजूद रहे।

चनेथू में संविधान निर्माता डॉ. अंबेडकर की जयंती मनाई गई

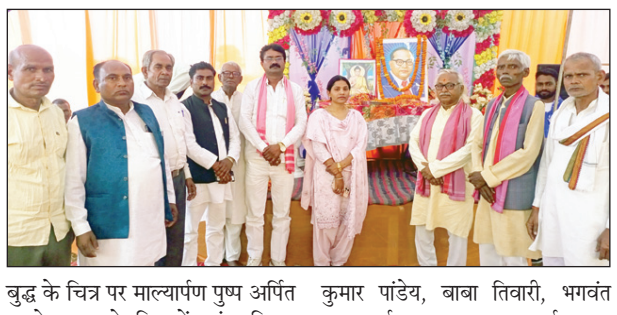

जंघई। भारत के इतिहास में जन्मे कई सारे महापुरुषों में से एक बड़ा नाम है बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का जिन्होंने समाज, शिक्षा, राजनीति और न्याय व्यवस्था की दिशा में कई बदलाव किए। डॉ. भीमराव अंबेडकर ऐसे ही एक महान विचारक, समाज सुधारक और संविधान निमार्ता थे जिनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ था, हर वर्ष 14 अप्रैल को पूरे भारत में अंबेडकर जयंती मनाई जाती है। चनेथू गांव में 14 अप्रैल को डॉ अंबेडकर की 134 वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें गायकों ने बाबा साहेब के विषय में गीत कविता सुनाकर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। आये हुए अतिथियों ने बाबा साहेब एवं गौतम बुद्ध के चित्र पर माल्यार्पण पुष्प अर्पित करते हुए उनके विचारों एवं व्यक्तित्व का बखान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ राजेश यादव जिला उपाध्यक्ष सपा मुख्य वक्ता एडवोकेट अनुराधा अंबेडकर प्रदेश उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता रामशिरोमणि कन्नौजिया एवं संचालन डॉ उदयराज ने किया। इस अवसर पर मुन्ना पांडेय प्रधान, संतोष कुमार पांडेय, बाबा तिवारी, भगवंत प्रसाद पूर्व प्रधान, बाबुलनाथ पूर्व प्रधान, राम प्रताप यादव, जज्जे यादव युवा सपा नेता, लालजी राकेश, जटाशंकर भारतीय, हवलदार यादव, विनय यादव, गंगा प्रसाद मौर्य, रमाकांत आदि लोगों उपस्थित रहे। राम सजीवन कन्नौजिया, विकास, छोटू, रोहित, संदीप आदि लोगों ने कार्यक्रम में भरपूर सहयोग किया।

जीरो डोज की समुदाय के प्रभावशाली व्यक्तियों का प्रशिक्षण आयोजित

कोरांव। सोमवार को सीएमओ प्रयागराज के आदेशानुसार सीएचसी कोरांव के सुप्रीडेंटेंट डॉ शमीम अख्तर,के पर्वेक्षण में वीसीपीएम कोरांव महेंद्र मिश्रा,के देखरेख में ग्राम सचिवालय भवन अल्हवा ब्लॉक कोरांव में अंबेडकर जयंती के शुभ अवसर पर ग्राम प्रधान अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे की अध्यक्षता में समुदाय में जीरो डोज के प्रभावशाली व्यक्तियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में सर्व प्रथम बाबा भीम राव अंबेडकर जयंती पर है ग्राम प्रधान ने बाबा साहब की चित्र पर माल्यार्पण किया,और उनके बताए हुए मार्गों पर चलने का आहवान किया। आयोजन में प्रशिक्षक के रूप में ब्लॉक कॉर्डिनेटर के रूप में श्रीमती सुनीता सिंह यूनिसेफ संस्था ने कार्यक्रम को संबोधित किया। और स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की। अपना अपना सभी ने परिचय दिया अपने अपने विचार व्यक्त किए। जीरो डोज यानि जीरो वर्ष ग्यारह माह तक के बच्चों को कोई टीका नहीं लगा हो वे बच्चे जीरो डोज में आते हैं। खास तौर से तीन माह से ऊपर तक का उन बच्चों को जो बुलाने पर भी टीका नहीं लगवाते उन्हें सभी लोग प्रभावशाली जनों के माध्यम से टीका करण अभियान में सहयोग प्रदान कराया जाय। ग्राम प्रधान अल्हवा श्री सिद्दीकी जो सामाजिक कार्यकर्ता और प्रधान संगठन के लीडर भी हैं उन्होंने सभी ग्राम पंचायतों के माध्यम से आह्वान किया कि आशा बहुओं के सहयोग से टीका करण में स्वास्थ्य संगठनों सरकार का और स्वास्थ्य हित में अपना योगदान अवश्य दें। जिस कारण सरकार द्वारा बीसीजी के टीके आदि कई बीमारियों के बचाव ही सके और टीका करण के कारण बहुत काफी बचाव भी हुआ है और हो भी रहा है। कार्यक्रम में संगीता ब्लॉक कॉर्डिनेटर, आशा बहू अल्हवा बिटटू बेबी, सोन कली आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, प्रेम लता, सुनीता देवी, उषा देवी,पार्वती, श्यामकली, अरुणा, विद्यावती, सरोज देवी, शाहजहां बेगम, वीरेश सिंह, सफाई कर्मी दिनेश कुमार सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

मौलवी लियाकत अली एजुकेशनल सोसायटी की तरफ से मनाई गई बाबा साहब जयंती

सोरांव। संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जयंती के मौके पर मकतब चश्म ए समद महतवाना मऊआईमा प्रयागराज में निबंध एवं क्विज प्रतियोगिता में भाग लिए बच्चों को सर्टिफिकेट, मेडल और पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि मोहम्मद साकिब (वीडीओ), विशिष्ट अतिथि मोहम्मद साजिद (वीडीओ) व डॉ. मोहम्मद आदिल, असिस्टेंट प्रोफेसर(बी.एम. कालेज, प्रोफेसर राजेंद्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज), प्रधानाचार्य मोहम्मद शाहिद, प्रबंधक मोहम्मद फरजान एवं शिक्षकगण मोहम्मद कमरान, मोहम्मद दानिश, अक्सा तसनीम व अतूफा जावेद आदि उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि मोहम्मद साकिब ने बच्चों को पढ़ाई पर जोर देने और उसके साथ खेलकूद को भी जरूरी बताया। मौलवी लियाकत अली एजुकेशनल सोसायटी के सदस्य डॉ आदिल ने बच्चों की हौसला आफजाई करते हुए बच्चों को भविष्य का लक्ष्य निर्धारित कर, उसी के हिसाब से तैयारी करने की बात कही। प्रधानाचार्य मोहम्मद शाहिद ने बच्चों की हौसला अफजाई की और उनके बेहतर भविष्य की कामना की। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर इकरा जलाल, द्वितीय स्थान पर आतिका परवीन व तृतीय स्थान पर समानिया बानो को सम्मानित किया गया। क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मोहम्मद उस्मान, द्वितीय स्थान हसन अब्दुल अजीज व तृतीय स्थान मोहम्मद सऊद को मेडल व पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर सोसायटी के अन्य सदस्य ओसामा जावेद और रूमी भी मौजूद रहे।

भारत के संविधान निर्माण में बाबा साहब की भूमिका है बेहद अहम : संजय गौतम

● संविधान शिल्पी बाबा साहेब डा भीमराव अंबेडकर के135वीं जयंती पर उनके विचारों को याद कर उनका संदेश जन जन तक पहुंचाने,संविधान की ताकत एवं उनके अधिकारों के बारे लोगों को जागरूक करने का आरपीआई कार्यकर्ताओं ने लिया संकल्प

मेजा। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारत सरकार के कानून मंत्री रामदास आठवले तथा प्रदेश अध्यक्ष पवन भाई गुप्ता के आह्वान पर विधानसभा अध्यक्ष डीके प्रजापति के नेतृत्व में बंधवा गांव स्थित आरपीआई कार्यालय पर सोमवार को संविधान निमार्ता बाबा साहेब डा भीमराव अंबेडकर की 135 वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आरपीआई के प्रयागराज जिलाध्यक्ष संजय गौतम एवं विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय प्रजापति स्वाभिमान मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष अधिवक्ता अवधेश प्रजापति रहे। कार्यक्रम की शुरूआत बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया गया। तत्पश्चात उपस्थित पदाधिकारियों कार्यकताओं को संबोधित करते हुएआरपीआई के प्रयागराज जिलाध्यक्ष संजय गौतम ने कहा कि संविधान शिल्पी बाबा साहेब डा भीमराव अंबेडकर द्वारा 26 नवंबर सन 1949 को भारत का संविधान लागू किया गया था। बाबा साहेब देश के करोड़ों गरीबों वंचितों के सच्चे मसीहा थे,जिनका आज पूरा देश नमन कर रहा है। श्री गौतम ने आगे कहा कि डा अंबेडकर महान अर्थशास्त्री, राजनीतिक एवं समाज सुधारक थे,भारत के संविधान निर्माण में उनकी अहम भूमिका रही है। इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि अधिवक्ता अवधेश प्रजापति ने कहा कि रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया प्रदेश में बाबा साहेब के संविधान सम्मत समाज बनाने के लिए युद्ध स्तर पर काम कर रही है। उन्होंने ने आगे कहा कि संविधान के अधिकारों से आम जनमानस के अलावा शोषितों वंचितों पिछड़ों सहित समाज के अन्य वर्गों को जागरूक करने के लिए आरपीआई बाबा साहेब के 135वीं जयंती पर बाबा साहेब के विचारों को याद करते हुए उनके संदेश को जन जन तक पहुंचाने का कार्य करेगी साथ ही साथ आम जनमानस को संविधान की ताकत और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता प्रदान करेगी,जो बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम में राकेश प्रजापति और ग्राम प्रधान बंधवा अनिल कुमार पटेल ने भी बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए नमन किया और उनके बारे में विस्तार से चर्चा किया। इस मौके पर वरिष्ठ समाजसेवी एवं अवकाश प्राप्त पीडब्लूडी मेठ रामखेलावन गौतम, राकेश प्रजापति, कृष्ण कुमार पांडेय, संजय कुमार शर्मा, प्रदीप कुमार, सियाराम, राजीव कुमार, कमलेश कुमार, गिरीश चंद्र पांडे, महेश प्रजापति, मनीष मिश्रा,श्रवण कुमार सिंह तथा दीपक चंद्र आदि के अलावा कई अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

शंकरगढ़ में चलती कार पर बम से हमला, बाल-बाल बचे व्यापारी

शंकरगढ़। शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के नारीबारी चौकी के पास रविवार रात एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। मध्य प्रदेश के रीवा जिले के चाकघाट निवासी व पावर ट्रैक ट्रैक्टर डीलर रवि केशरवानी अपने मित्रों के साथ प्रयागराज में एक कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे, तभी बाइक सवार दो अज्ञात हमलावरों ने उनकी चलती कार पर बम से हमला कर दिया।

यह सनसनीखेज वारदात रात करीब 9:30 बजे वैद्यनाथ धर्मशाला के पास हुई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जैसे ही कार नारीबारी चौकी के आगे पहुँची, बाइक सवार दो युवकों ने अचानक कार पर बम फेंका। तेज धमाके से पूरे इलाके में दहशत फैल गई और कार के शीशे चकनाचूर हो गए। कार में मौजूद सभी लोग घायल हो गए। इनमें शुभम केशरवानी और वेद द्विवेदी को कार का शीशा टूटने के कारण चोटें आईं। सभी घायलों को तत्काल स्वरूपरानी अस्पताल, प्रयागराज ले जाया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है।

एसीपी बारा कुंजलता ने बताया कि हमला सुनियोजित प्रतीत हो रहा है। व्यापारी रवि केशरवानी को मामूली चोटें आई हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि आरोपियों की पहचान जल्द कर ली जाएगी और उन्हें गिरफ़्तार किया जाएगा।पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है।

अग्निशमन शहीद दिवस मनाया गया

कौंधियारा। अग्निशमन स्मृति दिवस 14 अप्रैल के दिन शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है इस वर्ष स्मृति दिवस 14 से 16 अप्रैल तक मनाया जाएगा इस क्रम में आज अग्नि शमन विभाग द्वारा जन जागरुक करते हुए आग से बचाव की जनकारियां दी। 14 अप्रैल 1944 को मुंबई के बंदरगाह में माल वाहक जहाज जो समुद्र के रास्ते जा रहा था जिसमें आग लग गई थी जिसमें फायर सर्विस कर्मचारी व अधिकारी अपने जान की बाजी लगाते हुए आग बुझाई गई जिससे आग बुझाने के दौरान 66 फायर कर्मियों की आग में जलकर मृत्यु हो गई जिसकी याद में पूरे देश में 14 अप्रैल के दिन शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है तथा अग्निशमन विभाग द्वारा जन जागरुक करते हुए आग से बचाव संबंधी जानकारियां दी जाती हैं। इसके उपलक्ष में अग्निसमान एव आपात सेवा केंद्र बारा गौहनिया द्वारा फायर सर्विस की गाड़ियों के साथ जारी बाजार ,गौहनिया ,घूरपुर ,इशादतगंज आदि स्थानों में भ्रमण कर पंपलेट आदि का वितरण करते हुए जागरूक किया गया।

मेजा ऊर्जा निगम में धूमधाम से मनाया गया डा. भीमराव अंबेडकर की जयंती

● मेजा ऊर्जा निगम द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर प्राथमिक विद्यालय गडेवरा में स्टेशनरी वितरण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम में सोमवार को डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती को संयंत्र परिसर में उत्साहपूर्वक मनाया। इस अवसर पर एनएन सिन्हा, महाप्रबंधक प्रचालन एवं अनुरक्षण मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम में अनिल बवेजा, महाप्रबंधक इंजीनियरिंग, अमित रौतेला, मुख्य वित्तीय अधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस दौरान सभी ने डॉ अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित किया क

कार्यक्रम के दौरान कर्मचारियों ने डॉ अंबेडकर को याद किया और उनके असाधारण जीवन और भारतीय संविधान के निर्माण में उनके महत्वपूर्ण योगदान पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में 13 अप्रैल को सेवा समिति द्वारा कक्षा 12 तक के छात्रों के लिए आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए। इस प्रतियोगिता का विषय डॉ बीआर अंबेडकर का जीवन और भारतीय संविधान रहा। डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में प्राथमिक विद्यालय गडेवरा में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्राथमिक विद्यालय गडेवरा के विद्यार्थियों को स्टेशनरी सामग्री का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करना और डॉ. भीमराव अंबेडकर के शिक्षा संबंधी आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाना था। कार्यक्रम की शुरूआत डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मनोज कुमार वर्मा, डीजीएम एचआर, ओम सिंह, नीम के जनरल सेक्रेटरी, एलडी पांडेय, डिप्टी मैनेजर एचआर,गोपाल साह, अनिल शुक्ला ग्राम प्रधान गडेवरा सहित ग्रामवासियों और विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं अन्य शिक्षकगण की गरिमामयी उपस्थिति प्रमुख रूप से रही। अतिथियों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन, उनके संघर्ष और समाज में उनके अमूल्य योगदान पर प्रेरणादायक बातें साझा कीं। इस अवसर पर कुल 100 विद्यार्थियों को स्टेशनरी सामग्री वितरित की गई। जिसे प्राप्त करके बच्चों के चेहरों पर अत्यधिक प्रसन्नता दिखाई दी। इस कार्यक्रम की स्थानीय लोगों द्वारा सराहना की गई और मेजा ऊर्जा निगम का इस पुनीत कार्य में सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया।

नैनी के लोगों को मिला निःशुल्क शादी विवाह घर का तोहफा

नैनी। नैनी उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री एवं प्रयागराज शहर दक्षिणी विधायक नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने सोमवार को नैनी क्षेत्र के लोगों को सामुदायिक विवाह घर का तोहफा दिया। मंत्री नंदी ने विवाह घर का लोकार्पण कर क्षेत्र की जनता को समर्पित किया। वहीं विवाह घर का निर्माण करने वाले श्रमिकों को मंत्री ने सम्मानित किया। अब नैनी क्षेत्र के लोगों को अपने पुत्र एवं पुत्री के विवाह के साथ ही अन्य मांगलिक आयोजनों के लिए लाखों रूपए खर्च कर विवाह घर बुक नहीं कराना पड़ेगा। बल्कि लग्जरी सुविधाओं वाले प्राइवेट विवाह घरों की तरह ही सामुदायिक विवाह घर में शुभ आयोजन कर सकेंगे। इसका किराया बहुत ही कम या यूं कहें कि ना के बराबर है। इसके साथ ही मंत्री नंदी ने करीब दो करोड़ रूपए की लागत से नैनी क्षेत्र की कई सड़कों, गलियों एवं बस्तियों के आंतरिक मार्गों का भी लोकार्पण किया। इस मौके पर मंत्री नंदी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं कर्मयोगी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश आज विकास के नए सोपान रच रहा है। नए भारत का नया उत्तर प्रदेश आज नए कीर्तिमान रचते हुए देश का ग्रोथ इंजन बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि 2017 के पहले और आज के उत्तर प्रदेश में काफी अंतर है। 2017 के पहले काफी पिछड़ा एवं मूलभूत सुविधाओं से वंचित प्रयागराज शहर दक्षिणी विधानसभा क्षेत्र का नैनी अब विकास की मुख्य धारा से जुड़ चुका है। ज्यादातर पुरानी व जर्जर गलियों एवं सड़कों की मरम्मत का कार्य हो चुका है या फिर हो रहा है। मंत्री ने सोमवार को डांडी रीवा मुख्य मार्ग पर बड़ौदा ग्रामीण बैंक के सामने कच्ची रोड व नाली निर्माण कार्य का लोकार्पण, गंगोत्री नगर में इंटरलॉकिंग रोड एवं नाली निर्माण, चक भटाई की पटेल बस्ती में आंतरिक गलियों का निर्माण, चक रघुनाथ पंजाबी हाता में रोड निर्माण कार्य आदि का लोकार्पण किया। इस दौरान पार्षद व व्यापार मंडल अध्यक्ष राकेश जयसवाल, मण्डल अध्यक्ष रजत दुबे, पूर्व मण्डल अध्यक्ष दिलीप केसरवानी, रामलखन देववंशी, मण्डल प्रभारी रविन्द्र जायसवाल, पार्षद रूबी पासवान, राकेश जायसवाल, अनूप पासी, मुकेश भारती, रजनीकांत सोनकर, ओपी मिश्रा, श्याम मिश्रा, श्याम लाल यादव, दिनेश सिंह, उर्मिला यादव, दिनेश कुमार, दीपचंद्र मुन्ना प्रधान, अभिषेक सिंह, सुनील केसरवानी आदि रहे।

आरोपी को पकड़ने गई थी पुलिस, परिजनों ने मारपीट कर छुड़ाया, लड़की भगाने का दर्ज है मुकदमा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। आरोपी को पकड़ कर ले जा रही पुलिस टीम पर परिजनों ने हमला कर दिया। आरोपी को छुड़ाने का प्रयास करने लगे। इसी बीच परिजनों और पुलिसकर्मियों के बीच हाथापाई हो गई। मारपीट के दौरान आरोपी पुलिस के चंगुल से छूटकर भाग गया।इसके बाद पुलिस वापस लौट गई। घटना का वीडियो किसी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। पुलिस ने मामले में सात आरोपियों पर मुकदमा दर्ज किया है। ये सभी फरार हैं। घटना 11 अप्रैल की होलागढ़ थाना क्षेत्र की है।

आरोपी पर लड़की भगाने का केस दर्ज

होलागढ़ थाना क्षेत्र के गांव दहियावां काशीपुर निवासी रविंद्र कुमार सरोज पर लड़की को भगा ले जाने का मुकदमा दर्ज है। पुलिस ने लड़की को बरामद कर लिया। मगर आरोपी फरार था। 11 अप्रैल को पुलिस को जानकारी मिली कि आरोपी घर पर है।पुलिस सुबह करीब 10 बजे गांव पहुंची। यहां दबिश के दौरान पुलिस ने आरोपी रविंद्र कुमार सरोज को पकड़ लिया। घर वाले इसका विरोध कर हंगामा करने लगे। पुलिस आरोपी को खींचकर ले जाने लगी। तभी परिजनों ने पुलिस कर्मियों पर हमला कर दिया।

पुलिस से हाथापाई के बीच भागा आरोपी

दोनों तरफ से जमकर मारपीट हुई। हंगामा होने पर गांव के लोग भी जुट गए। मारपीट के दौरान आरोपी पुलिस के चंगुल से छूटकर भाग गया। मारपीट के बाद पुलिस वापस लौट आई। पुलिस ने मामले को दबा दिया। सोमवार को मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर होने लगा। इसके बाद पुलिस ने 7 आरोपियों पर केस दर्ज किया।

7 पर केस दर्ज, सभी गांव से फरार

होलागढ़ थाना प्रभारी वीरेंद्र कुमार मिश्र ने बताया कि आरोपी लड़की को बहला-फुसला कर भगा ले गया था। इसके बाद लड़की की बरामदगी हो गई थी। आरोपी की तलाश में पुलिस टीम गई थी। तभी विरोध कर मारपीट की गई।आरोपियों पर पुलिस कार्रवाई में बाधा डालने की धारा में केस दर्ज किया गया है। कानूनी कार्रवाई की जा रही है। सभी 7 आरोपी गांव से भागे हुए हैं। पुलिस उनकी तलाश में जुटी है।

राजनीति में संवेदनशीलता और समानता के नई परिभाषा गढ़ने में नारी नेतृत्व की भूमिका होगी अहम : शालिनी

● बाबा साहब की 135वीं जयंती पर ने जेडीयू पदाधिकारियों ने दी नई चेतना की दस्तक,बुलंद किया सामाजिक बदलाव स्वर कहा बाबा साहब के सामाजिक क्रांति के मिशन को महिलाएं दे रही हैं नई ऊंचाइयां

अखंड भारत संदेश

मेजा। बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती के अवसर पर जनता दल यूनाइटेड ने बांदा जिले से सामाजिक न्याय और समता का बिगुल फूंक दिया है। इंदिरा नगर स्थित जिला कार्यालय में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में समाज के हर वर्ग की भागीदारी ने यह प्रमाणित कर दिया कि अंबेडकर के विचार आज भी परिवर्तन की अग्निशिखा हैं।कार्यक्रम की शुरूआत बाबा साहेब की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण से की गई। इस दौरान कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं जेडीयू की महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष शालिनी सिंह पटेल कहा कि बाबा साहेब ने जिस सामाजिक क्रांति की शुरूआत की थी,उसे आज महिलाएं नई ऊंचाइयों तक ले जा रही हैं। उन्होंने आगे कहा जदयू महिला प्रकोष्ठ संविधान की रक्षा और महिलाओं के आत्म-सम्मान की लड़ाई के लिए पूरी ताकत से खड़ा है। इतना ही नहीं सुश्री शालिनी ने यह भी कहा कि राजनीति में अब संवेदनशीलता और समानता की नई परिभाषा गढ़ने का समय आ गया है, जिसमें नारी नेतृत्व की निर्णायक भूमिका होगी। इसी क्रम में जेडीयू के प्रदेश प्रवक्ता सांस्कृतिक प्रकोष्ठ संतोष अकेला ने कहा कि बाबा साहेब सिर्फ संविधान निमार्ता नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के अप्रतिम योद्धा थे। उनके विचारों को केवल मंच तक नहीं, जन-जन तक पहुँचाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष पंकज सिंह तथा आयोजन की बागडोर जदयू जिलाध्यक्ष उमाकांत सविता ने संभाली।

आइए जानते हैं बाबा साहेब की जयंती पर वक्ताओं के विचार और प्रतिक्रिया। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष जेडीयू समाज सुधार वाहिनी श्रीमती गरिमा सिंह पटेल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ अंबेडकर के विचारों को जमीनी स्तर पर उतारना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।जिलाध्यक्ष दिव्यांग प्रकोष्ठ जेडीयू श्रीराम प्रजापति ने कहा बाबा साहेब आत्म-सम्मान के साथ जीने का अधिकार दिलाया है, जो आज भी दिव्यांग समाज के लिए प्रेरणा दायक रहा है। नगर अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ जेडीयू पिंकी प्रजापति ने अपने संबोधन में कहा कि बाबा साहेब की चेतना अब आंदोलन बन चुकी है, महिलाओं की आवाज अब दबेगी नहीं,बल्कि और बुलंद होगी। जिलाध्यक्ष नगर विकास प्रकोष्ठ जेडीयू काशी प्रसाद याज्ञिक ने कहा हम ऐसा नगर और समाज बनाना चाहते हैं जहाँ न्याय और विकास साथ-साथ चलें यही बाबा साहेब का सपना था जिसे पूरा करना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। केंद्रीय अध्यक्ष बुंदेलखंड आजाद सेना जेडीयू प्रमोद आजाद ने कहा बाबा साहेब के विचारों को आत्मसात करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जातिवाद और भेदभाव को खत्म कर समतामूलक समाज की ओर बढ़ना ही सही दिशा है।

राजेश राष्ट्रवादी ने कहा अंबेडकर के विचार केवल दलितों तक सीमित नहीं हैं, वे पूरे राष्ट्र की आत्मा हैं। समाजसेवी अटल बिहारी पटेल कहते हैं कि बाबा साहेब का संघर्ष हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत है जो समानता, शिक्षा और सम्मान के अधिकार के लिए लड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि इस अवसर जेडीयू पदाधिकारियों और कार्यकताओं द्वारा स्थानीय पत्रकारों का भी स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस दौरान सभी वक्ताओं ने कहा कि सामाजिक बदलाव की लड़ाई में मीडिया की भूमिका बेहद अहम रही है। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थितजनों ने संविधान की रक्षा, समता के प्रसार और सामाजिक न्याय की स्थापना हेतु संगठित होने और संघर्ष करने का संकल्प लिया। इस मौके पर बाबूलाल चौधरी जिला महासचिव, अखिलेश कुमार यादव जिला महासचिव, रागिनी तिवारी जिला महिला अध्यक्ष, सद्दाम हुसैन जिला उपाध्यक्ष, युवा प्रकोष्ठ, नीरज सिंह जिला उपाध्यक्ष, शिव मोहन चौधरी, मिथिला सोनी, ज्योति मौर्य महिला प्रकोष्ठ, हजरत अली जिला महासचिव, बिहारी लाल अनुरागी महासचिव, दिव्यांग प्रकोष्ठ, अर्चना वर्मा, राजन सिंह तथा लक्ष्मी पटेल सहित कई अन्य कार्यकर्ता एवं बुद्धिजीवी लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

जमीनी विवाद में तमंचा लेकर दौड़ाया, वीडियो वायरल

झूँसी। स्थानी थाना क्षेत्र के पूरे सूरदास में अपनी जमीन को देखने गए युवक को जमीनी विवाद के चलते एक मनबड तमंचा लेकर अपने साथियों के साथ दौड़ा लिया जिसका पीड़ित ने वीडियो बना लिया मामले की लिखित शिकायत पुलिस से की गई है। पुलिस दो लोगो को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रहे हैं।

नई झूंसी तुरकाना बस्ती निवासी मेराजुद्दीन ने पुलिस से लिखित शिकायत करते हुए बताया कि उनकी पूरे सूरदास में जमीन है सोमवार को वह अपने कुछ साथियों के साथ उसी जमीन को देखने गए थे वहां अपने साथियों के साथ पहले से ही मौजूद एक मनबड ने मेराजुद्दीन को देखते ही गाली देने लगा और तमंचा लेकर दौड़ा लिया साथ में गए लोगों ने बीच बचाव किया तब जाकर पीड़ित की जान बच पाई। पीड़ित ने मामले की लिखित शिकायत करते हुए पुलिस को तमंचे के साथ दिख रहे मनबड की वीडियो भी सौपा है, पुलिस ने दोनो पक्ष से एक-एक लोगों को हिरासत में लिया है और तमंचे के साथ वीडियो में दिख यह युवक की तलाश में जुट गई है।

चोरों ने किया घर पर हाथ साफ परिजनों को नहीं लगी भनक

झूंसी। चौकी के कलवारी टोला स्थित एक मकान पर चोरों ने धावा बोलकर लाखों के जेवरात और नकदी, मोबाइल समेट कर फरार और बगल के कमरे में सो रहे परिजनों को भनक तक नहीं लगी सुबह मामले की जानकारी होने पर पुलिस को सूचना दी गई। वार्ड 85 झूंसी चौकी के कलवारी टोला निवासी मो. मकसूद ने पुलिस से लिखित शिकायत करते हुए बताया कि शनिवार की देर रात चोरों ने घर मे घुस कर कमरे में रखें अंगूठी, सोने की चेन, पायल सहित लाखों के जेवरात, एक लाख नकदी व मोबाइल उठा ले गए, बगल के कमरे में सो रहे परिजनों को सुबह घर मे चोरी की जनकारी हुई तब मामले के लिखित शिकायत पुलिस से की पर घटना के 24 घंटे बाद भी रिपोर्ट दर्ज नही हुई है।

हर प्रशंसा और सम्मान हमें अपने उत्तर दायित्व का दिलाते हैं याद : रुचि तिवारी

● बीआरसी उरुवा में अंबेडकर जयंती पर आयोजित हुए विविध कार्यक्रम,स्कूल चलो अभियान के तहत रैली भी निकाली गई,शिवसेना की प्रदेश सचिव ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

मेजा। संविधान निमार्ता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर सोमवार को विकास खंड उरुवा के बीआरसी कार्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि के साथ हुई, जिसमें खंड शिक्षा अधिकारी उरुवा राजेश यादव, शिवसेना उत्तर प्रदेश की प्रदेश सचिव श्रीमती रुचि अभिषेक तिवारी शामिल रही। हमारा संविधान हमारा स्वाभिमान एवं स्कूल चलो अभियान की रैली को रुचि अभिषेक तिवारी ने बतौर मुख्य अतिथि बीआरसी से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली बीडीओ उरुवा कार्यालय तक गई। इस रैली में छात्र छात्राएं, शिक्षक, शिक्षिकाएं, संकुल प्रभारी, पूर्व व वर्तमान एआरपीगण सक्रिय रूप से शामिल हुए। रैली के बाद बीआरसी सभागार में आयोजित समारोह में 2024-25 सत्र में चयनित 39 निपुण विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही नवागत एआरपी अजीत कुमार मिश्रा, रामानंद शुक्ला, जितेंद्र नाथ दुबे तथा अन्य ब्लॉकों से लौटे एआरपी पुष्पेंद्र शुक्ला और रुचि श्रीवास्तव का स्वागत किया गया। पूर्व एआरपी सुनील शुक्ला, राजेश मिश्रा, प्रीतम दास व विमलेश यादव को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी राजेश यादव अपने उद्बोधन के दौरान पूर्व एआरपी की विदाई पर भावुक हो उठे और उनके कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मुख्य अतिथि श्रीमती तिवारी ने सभी शिक्षकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हर प्रशंसा और सम्मान हमें अपने उत्तरदायित्व की याद दिलाते हैं। शिक्षा ही वह दीप है, जो अंधकार को मिटाता है। उन्होंने बीईओ से आग्रह किया कि उन्हें भी एक विद्यालय गोद में दिया जाए ताकि वे उसके विकास में योगदान दे सकें। इस इस मौके पर विनोद शुक्ला, राघवेंद्र प्रताप सिंह, मुकेश शुक्ला, संतोष दुबे, अजीत तिवारी, गीता देवी, विद्या यादव, नीलम शुक्ला, स्तुति श्रीवास्तव, माया तिवारी, रामसेवक प्रजापति, दीपक गुप्ता, शालिनी अग्रवाल, संतोष कुमार, शिव शंकर द्विवेदी, कुशल नारायण द्विवेदी, अनिल यादव, राजेश कुमार, राजेश्वरी सिंह, कृष्ण कुमार शुक्ला, ओम प्रकाश, अनुज श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में शिक्षक-शिक्षिकाएं व एआरपीगण प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

मोटरसाइकिल व ई रिक्शा के लिए चलाया गया वाहन चेकिंग अभियान

कौंधियारा। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर कौंधियारा क्षेत्र के जारी बाजार में रविवार को पैदल गश्त व वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान दर्जनों वाहन का शक्ति के साथ चालान किया गया। इसके साथ कई वाहनों से जुमार्ना भी वसूला गया। वहीं, पुलिस के इस अभियान से रिक्शा चालक एव मोटरसाइकिल चालकों में हड़कंप मच गया। इस अभियान के तहत वाहन पर 3 सवारी ,बीना हेलमेट, नाबालिक, बिना ड्राइवर लाइसेंस व रिक्शा चालक का चालान किया गया जिसके तहत 16 चालान किए गए। इसके साथ कई वाहनों से जुमार्ना भी वसूला गया। वहीं, पुलिस के इस अभियान से वाहन चालकों में हड़कंप मचा रहा ।

भवन्स मेहता स्नातकोत्तर महाविद्यालय भरवारी, कौशाम्बी

आवश्यकता है

भवन्स मेहता स्नातकोत्तर महाविद्यालय भरवारी, कौशाम्बी में स्ववित्तपोषित योजनान्तर्गत सत्र 2025-26 में संचालित होने वाले पाठ्यक्रम/विषय में असिस्टेन्ट प्रोफेसर की आवश्यकता है। प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय प्रयागराज तथा यू0जी0सी0 परिनियमावली एवं शासनादेशों के अनुरूप निर्धारित शैक्षिक योग्यता (जू0जी0सी0 नेट/पी0एच0डी0) रखने वाले इच्छुक अभ्यर्थी सादे कागज पर आवश्यक शैक्षिक अभिलेखों सहित आवेदन करें।

परास्नातक स्तर पर

एम0-ए0 -	संस्कृत-	पदों की संख्या-02
एम0एससी0 -	वनस्पति विज्ञान-	पदों की संख्या-02
एम0एससी0-	भौतिक विज्ञान-	पदों की संख्या-02
एम0ए0-	इतिहास-	पदों की संख्या-02

अभ्यर्थी उक्त पदों हेतु विज्ञापन प्रकाशित होने की तिथि से 21 दिन के अन्दर आवेदन पत्र भवन्स मेहता स्नातकोत्तर महाविद्यालय भरवारी, कौशाम्बी-212201 के कार्यालय में पंजीकृत डाक के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं। अनुभवी अभ्यर्थियों को वरीयता प्रदान की जायेगी।

प्राचार्य

धूम-धाम से मनायी गयी भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती

विधायक, डीएम व अन्य जनप्रतिनिधियों ने किया माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित

● इस अवसर पर अम्बेडकर चैराहा पर विधायक, डीएम द्वारा सफाई कर्मचारियों का माल्यार्पण किया गया एवं उन्हें अंगवस्त्रम प्रदान कर किया गया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर उपस्थित लोग

प्रतापगढ़। जनपद में सोमवार को भारत रत्न संविधान निमार्ता बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की 134वी जयंती हर्षोल्लास व धूम-धाम से मनाया गया। जनपद के अम्बेडकर चैराहे पर स्थापित बाबा साहेब डा0 भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति पर विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी, पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार, भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी (वि0श्रा0) आदित्य प्रजापति सहित अन्य जनप्रतिनिधियों व पार्टी पदाधिकारियों ने माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस दौरान अम्बेडकर चैराहा पर विधायक, डीएम द्वारा सफाई कर्मचारियों का माल्यार्पण किया गया एवं उन्हें अंगवस्त्रम् प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इसके बाद कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित कार्यक्रम में जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इसके अलावा अपर जिलाधिकारी (वि0रा0) आदित्य प्रजापति, प्रशासनिक अधिकारी कलेक्ट्रेट दलजीत, उप जिलाधिकारी सहित कलेक्ट्रेट के अन्य कर्मचारियों ने भी डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित गोष्ठी में डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के योगदान को याद किया गया एवं उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया गया। जिलाधिकारी ने अम्बेडकर चैराहे पर डा0 अम्बेडकर सेवा समिति के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुये। डीएम ने डा0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती पर लोगों को बधाई दी और बताया कि अम्बेडकर न केवल संविधान के निमार्ता थे बल्कि एक महान अर्थशास्त्री, शिक्षाविद्, कानूनविद, लेखक और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी थे। बाबा साहेब डा0 भीमराव अम्बेडकर के विचार, उनके आदर्श और उनका व्यक्तित्व हम सबके लिए एक प्रेरणास्त्रोत हैं। उन्होंने कहा की बाबा साहब का पूरा जीवन देश सेवा को समर्पित था। इसी प्रकार डा0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती के अवसर पर समस्त विकास खण्डों, तहसीलों, नगर पंचायतों के कार्यालयों, ग्राम पंचायतों, शिक्षण संस्थानों तथा जनपद के विभिन्न स्थलों जहां पर डा0 भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा स्थापित है वहां पर भी कार्यक्रम आयोजित किये गये एवं अम्बेडकर जयन्ती धूम-धाम से मनाया गया। ज्ञातव्य है कि डा0 अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर शासन द्वारा जनपद में 14 से 18 अप्रैल तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें, यात्रायें निकाली जायेंगी, वाद-विवाद/ सेमिनार, खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। ग्राम पंचायतों में अलग-अलग तिथियों में संविधान स्वाभिमान यात्रा निकाली जायेगी।

विद्यालय में डा0 अम्बेडकर की जयन्ती पर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारत रत्न बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती बड़े धूम-धाम से जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय (पूर्ववर्ती नाम-राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय) नरायनपुर में मनायी गयी। इस अवसर पर जिला समाज कल्याण अधिकारी नागेन्द्र कुमार मौर्य, प्रधानाचार्य एवं विद्यालय के समस्त स्टाफ के साथ छात्रों ने प्रभात फेरी निकाली तथा बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ मूल कर्तव्य की शपथ के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ जिला समाज कल्याण अधिकारी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर छात्रों में निबन्ध, भाषण, स्लोगन, पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और सभी छात्रों को मिष्ठान वितरण करके कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य अखिलेश नारायण, प्रवक्ता राम बहादुर सहित प्रशान्त, पुष्पेन्द्र एवं जय मंगल सिंह आदि उपस्थित रहे।

राजकीय सम्मान संग धूमधाम से मनाई गई बाबा साहब की जयंती

पट्टी। विकासखंड मुख्यालय पर सोमवार को स्वतंत्रता के अमृत काल में बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत ब्लॉक प्रमुख राकेश कुमार सिंह (पप्पू सिंह) व बीडीओ राजीव कुमार पांडेय ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने डॉ. अंबेडकर के संघर्षपूर्ण जीवन उनके विचारों और सामाजिक न्याय, समानता एवं एकता के प्रति उनके योगदान पर प्रकाश डाला। ब्लॉक प्रमुख राकेश कुमार सिंह ने कहा कि महिलाओं के अधिकारों एवं वंचित वर्ग के उत्थान के लिए डॉ. अंबेडकर ने जो कार्य किए, वे आज भी प्रेरणादायक हैं। उनका जीवन हमें समता मूलक समाज की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाता है। बीडीओ राजीव कुमार पांडेय ने कहा कि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को नई दिशा और नई गति देने एवं भारत के संविधान निर्माण में भारत रत्न बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का अतुलनीय योगदान है।एडीओ पंचायत विजयराज मुरैला द्वारा गीत गाकर डॉ. अंबेडकर के जीवन पर मार्मिक प्रस्तुति दी गई। इस दौरान एडीओ आईएसबी राजेश कुमार, ग्राम विकास अधिकारी ध्रुव जायसवाल, ग्राम पंचायत अधिकारी प्रद्युम्न कुमार, अखिलेश यादव, पवन कुमार, संदीप कुमार, अभिषेक रावत आदि मौजूद रहे।

जयंती पर बाबा साहब की भव्य प्रतिमा का किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेश

लालगंज। नगर के सलेम भदारी वार्ड में स्थित अम्बेडकर पार्क में सोमवार को राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी तथा कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने बोधिसत्व संविधान निमार्ता बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भव्य एवं विशालकाय प्रतिमा का समारोहपूर्वक लोकार्पण किया। अम्बेडकर जनकल्याण सेवा समिति द्वारा आयोजित जयन्ती समारोह में विधायक मोना तथा राज्यसभा सासंद प्रमोद तिवारी ने बाबा साहब की प्रतिमा पर संयुक्त रूप से माल्यार्पण कर कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से उनकी अविस्मरणीय सेवाओं को नमन किया। विधायक आराधना मिश्रा मोना ने जयन्ती को यादगार बनाते हुए अम्बेडकर पार्क के सौन्दर्यीकरण के लिए विधायक निधि से दस लाख रुपए की सौगात का ऐलान किया। वहीं उन्होनें नगर पंचायत की कार्यदायी संस्था की ओर से पार्क में एक हाईमास्ट तथा पैंतालिस लाख रुपए की कार्ययोजना की भी मंजूरी का ऐलान किया। विधायक की सौगात पर कार्यक्रम स्थल पर मौजूद हजारों अम्बेडकर अनुयायियों की करतल ध्वनियां गूंज उठी। कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि संविधान और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी और बाबा साहब अम्बेडकर को एक युग के भगवान का दर्जा मिलेगा। उन्होनें कहा कि बाबा साहब ने संविधान के जरिए देश में गरीब से गरीब को मताधिकार का समान अवसर प्रदान कराते हुए लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की। उन्होनें कहा कि यह अधिकार डॉ0 अम्बेडकर के दूरदर्शी चिन्तन और कांग्रेस के संकल्प से देश की आम जनता को मिलना लोकतंत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संविधान में सभी को अपनी आवाज उठाने का लोकतांत्रिक हक है। उन्होने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता संभालते ही गरीब दलित और गरीबी से जूझ रहे पिछड़ों को आरक्षण प्रदान किया। अम्बेडकर सेवा समिति की ओर से संयोजक छोटे लाल सरोज, केके सरोज, महमूद आलम व सभासद जावेद खान ने राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी एवं विधायक आराधना मिश्रा मोना को बाबा साहब अम्बेडकर की प्रतिमा एवं संविधान के प्रतीक चिन्ह को प्रदान कर सम्मानित किया। संचालन मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल व प्रचार मंत्री दीपू पासी ने संयुक्त रूप से किया। ब्लाक प्रमुख इं. अमित सिंह पंकज व चेयरपर्सन अनीता द्विवेदी विशिष्ट अतिथि रहे। इसके पहले क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने रामपुर संग्रामगढ़ के अलीपुर में कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित संविधान बचाओ सम्मेलन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति का भव्य अनावरण किया। कार्यक्रम का संयोजन हरिश्चंद्र सरोज व प्रधान डा0 रामजीत सरोज तथा संचालन डॉ. नन्हें लाल यादव ने किया। इधर सांगीपुर के उस्मानपुर गांव में राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने संविधान बचाओ सम्मेलन में भाजपा की तानाशाही को लेकर कड़े हमले बोले। यहां कार्यक्रम का संयोजन प्रधान रामसेवक व शिवकुमार साहू ने किया। सम्मेलन का संचालन पूर्व प्रमुख रामकृपाल पासी ने किया। इस मौके पर सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बबलू, भुवनेश्वर शुक्ल, गयादीन चैधरी, धर्मपाल गौतम, रामलखन जायसवाल, अमरावती, मुन्नी लाल सरोज, रोशन लाल सरोज, एमडी सरोज, साहब लाल रजक, प्रमोद सरोज, शिव कुमार सरोज, सोनू पासी, सुरेन्द्र गौतम, शिवकुमार कनौजिया, मेराज खान, अभिषेक सरोज आदि रहे।

बाबासाहेब की जयंती पर आरएसएस द्वारा खण्ड ईकाइयों में आयोजित हुई संगोष्ठी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बाबा बेलखरनाथ धाम स्थित बालिका विद्यालय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचार प्रमुख प्रभा शंकर पाण्डेय रहे।इस मौके पर सह जिला संघचालक अशोक, खंड संघचालक दिनेश, जिला प्रचार प्रमुख अंकुर श्रीवास्तव, खंड कार्यवाह अजय सिंह आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचार प्रमुख प्रचार प्रमुख प्रभा शंकर पाण्डेय ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ भीमराव अंबेडकर महामानव और महान दार्शनिक थे उनका जीवन हिंदुस्तान की सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए सदैव क्रियाशील रहा। उन्होंने कहा कि अंबेडकर ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विचारधारा से प्रभावित रहे उन्होंने समय-समय पर डॉक्टर हेडगेवार के साथ बैठकर भारत की उत्कृष्टता के लिए विचार विमर्श करते रहे। इस अवसर पर दीपक, शिवेंद्र, राजदेव,अजीत,दिनेश राजकुमार, रमेश, दिवाकर, सीताराम, बिहारी लाल हरिजन, दीपक, रमेश भास्कर सुरेश, अशोक कुमार, मुन्ना, महेश, बबलू, विजय आदि उपस्थित रहे। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की खंड ईकाई शिवगढ़ में भी बाबासाहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम की शुरूआत अतिथियों एवं समाज के बंधुओं द्वारा बाबा साहब के चित्र पर पुष्प एवं माल्यार्पण कर किया।इस मौके पर मुख्य वक्ता के रूप में जिला ग्राम संयोजक विनोद रहे। उन्होंने कहा कि बाबा साहब समाज के एकत्व एवं समत्व के अग्रदूत रहे।उनका बनाया संविधान हमारे लोकतंत्र की रीढ़ है। इस मौके पर खण्ड संघचालक क्षमा शंकर, खण्ड कार्यवाह नीरज,नप अध्यक्ष मीरा बद्री गुप्ता, विवेक, संदीप,रवि राजू शिवा अश्विनी आदि रहे।

स्थगन आदेश के बावजूद भी हो रहा है मकान का निर्माण

पट्टी। जमीन का न्यायालय में मुकदमा बिचारा धीन है जिस पर न्यायालय से स्थगन आदेश भी पारित है, इसके बावजूद भी दबंग जमीन पर मकान का निर्माण कर रहे हैं। पीड़ित ने मामले में उच्च अधिकारियों से शिकायत किया है। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के धानेपुर गांव निवासी रामनाथ ने तहसीलदार को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसके जमीन का मुकदमा न्यायालय में बिचारा धीन है इसके बावजूद भी दबंग पड़ोसियों द्वारा मकान का निर्माण किया जा रहा है। पीड़ित ने मामले की शिकायत आसपुर देवसरा थाने पर किया लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। कार्रवाई न होने पर मामले की शिकायत लेकर तहसीलदार पवन सिंह के पास आया। प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। मामले में तहसीलदार ने तत्काल काम बंद कराने का आदेश जारी किया है।

जमीनी विवाद में चली कुल्हाड़ी, तीन घायल

बम के साथ धराया आरोपी भेजा जेल

बेलखरनाथ धाम। गोबर फेंकने जा रहे युवक पर जमीनी विवाद के चलते कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया बीच बचाव करने पहुंचे तो अन्य लोग भी गंभीर रूप से घायल हो गए।

दिलीपपुर थाना क्षेत्र के श्रीनाथपुर निवासी अकबर व जाबिर के बीच आबादी की जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। सोमवार की सुबह सात बजे अकबर गोबर फेंकने घर के बगल जा रहे था कि पहले से घात लगाकर बैठे आधा दर्जन लोगों ने कुल्हाड़ी व फरसा से हमला कर दिया।हल्ला गुहार पर पहुंचे लोगों पर भी आरोपितो ने हमला कर दिया। जिसमें अकबर(35), खालिद (22) तथा नसीर (52) गंभीर रूप से घायल हो गए। अकबर व खालिद की हालत गंभीर देखते हुए सीएचसी बाबा बेलखरनाथ धाम से मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। जहां दोनों हालत गंभीर बनी हुई है।पीड़ित नसीर ने चार लोगों को नामजद करते हुए पुलिस को तहरीर दी है।एसओ दिलीपपुर शत्रुघ्न वर्मा ने बताया कि आबादी की जमीन को लेकर दो पक्षों में मारपीट हुई है, घायलों को इलाज के लिये अस्पताल भेजा गया है।तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया जा रहा है।

लालगंज। कोतवाली पुलिस ने चेकिंग के दौरान एक आरोपी को चार देशी बम के साथ हिरासत मे ले लिया। कोतवाली के दरोगा विवेक यादव सोमवार की सुबह फोर्स के साथ रायपुर तियांई चैराहे पर चेकिंग कर रहे थे। सूचना मिलने पर पुलिस टीम जगन्नाथपुर गांव के समीप पुलिया पर पहुंची तब एक संदिग्ध खड़ा दिखा। पुलिस टीम को देखते ही आरोपी भागने लगा। फोर्स ने दौड़ाकर उसे पकड़ लिया। पकड़े गये आरोपी लालगंज थाना के बभनपुर निवासी स्व. छोटे लाल के पुत्र सचिन यादव के पास से चार देशी बम बरामद हुआ। पुलिस ने पूछताछ कर दोपहर बाद आरोपी को जेल भेज दिया।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर निकालीं गई शोभायात्रा

अखंड भारत संदेश

बेलखरनाथ धाम। तहसील क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर भारत रत्न डाक्टर बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर की जयंती धूमधाम से मनाया गया।इस दौरान शोभायात्रा निकाली गई। बाबा बेलखरनाथ धाम ब्लाक कार्यालय में बीडीओ राजीव पांडे, सीएचसी बेलखरनाथ धाम में डाक्टर आरिफ हुसैन, बीपीएम लोकेश श्रीवास्तव, बीआरसी केंद्र पर एबीएसए विजेंद्र स्वरुप निगम द्वारा बाबा साहेब के जीवन पर प्रकाश डाला गया।इसी तरह डडवा महोखरी, भदेवरा, सराय भवानी व गडौरी, गांव से बाबा की जंयती नारे लगाते हुए शोभायात्रा निकाली गई तथा डीजे की धुन पर पुरुष महिलाएं, बच्चे नाचते झूमते रहे।इस दौरान उडैयाडीह बाजार में भारी भीड़ उमड़ पड़ी। सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर पट्टी कोतवाल अवन कुमार दीक्षित, चैकी इंचार्ज एहसानुल हक, एसआई श्याम सुन्दर गिरी एसआई श्रीप्रकाश राय हल्का सिपाही विनोद सिंह,सत्यम शर्मा,व गुलशन मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

मधुमक्खी के हमले में पांच घायल

पट्टी। आम के पेड़ में लगे मधुमक्खी के छत्ते में शरारती बच्चों ने पत्थर मार दिया। जिससे मधुमक्खी उग्र हो गई वहीं बगल में महुआ बिन रहे किशोरी और युवक के ऊपर मधुमक्खी ने हमला बोल दिया। मधुमक्खी के हमले से तीन किशोरी व दो युवकघायल हुए हैं। कंधई थाना क्षेत्र के अलीपुर गांव की रहने वाली आरती पटेल, रामसेवक, प्रीति, शिव प्रसाद निशु सोमवार की दोपहर 12 बजे के आसपास महुआ बिन रही थी। इस दौरान वहां पर मौजूद किसी शरारती बच्चे ने आम के पेड़ में लगे मधुमक्खी के छत्ते में पत्थर मार दिया। जिससे मधुमक्खी उग्र होते हुए हमलावर हो गई। वहां पर मौजूद पांचो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंचे परिजन सभी घायलों को 108 एंबुलेंस से इलाज के लिए सीएससी लेकर आए जहां पर सभी का इलाज चल रहा है।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की कथा सुन भावविभोर हुए श्रद्धालु

प्रतापगढ़। सगरा सुन्दरपुर में चल रही सात दिवसीय श्रीमदभागवत कथा ज्ञान यज्ञ में कथावाचक श्रीधाम वृंदावन से पधारे सर्वेशमणि त्रिपाठी के मुखारबिंद से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की कथा सुन श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। कथाव्यास आचार्य सर्वेशमणि त्रिपाठी जी ने बताया कि अत्याचारी मथुरा नरेश कंस के पापों से मुक्ति व धर्म की स्थापना के लिए भगवान वासुदेव को मां देवकी के गर्भ से जन्म लेना पड़ा। कथाव्यास ने बताया कि भगवान श्रीकृष्ण के जन्म लेते ही जेल में बंद उनके माता पिता के सभी बन्धन टूट गये। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म को लेकर सजी झांकी कथा के दौरान आकर्षण का केन्द्र बनी रही। श्रद्धालुओं ने भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव मनाया। नंद के आनन्द भयो जय कन्हैयालाल की जैसे भजनों की प्रस्तुति पर श्रद्धालु मगन हो नृत्य करने लगे। महिलाओं ने सोहर गाकर श्रीकृष्ण के जन्म की खुशियां साझा की। आयोजक ब्रहमाकांत द्विवेदी महंत व गीता द्विवेदी ने व्यासपीठ का पूजन किया। संयोजक शिवम द्विवेदी ने श्रद्धालुओं का स्वागत किया। इस मौके पर रामपुर बावली व्यापार मण्डल अध्यक्ष राजू सिंह, प्रधानाचार्य आचार्य उमाशंकर मिश्र, अरविंद सिंह, रामेश त्रिपाठी, हरिश्चंद्र शुक्ल, कुलदीप शुक्ल, दयाशंकर तिवारी, संध्या तिवारी, हरीश तिवारी, माधवकांत द्विवेदी, रामकुमार मिश्र, शिवकुमार त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

रंजिशन मारपीट में दो नामजद व पांच अज्ञात के खिलाफ हत्या के प्रयास का मुकदमा

लालगंज। कोतवाली पुलिस ने दो नामजद तथा पांच अज्ञात आरोपियों के खिलाफ रंजिशन मारपीट मे हत्या के प्रयास तथा बलवा समेत गंभीर धाराओ मे केस दर्ज किया है। पुलिस ने घटना में एक आरोपी को हिरासत में लेकर जेल भेज दिया है। लालगंज कोतवाली के ताजपुर तिलकराम निवासी स्व. छेदीलाल की पत्नी लखपती वर्मा ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती तेरह अप्रैल को रात नौ बजे विपक्षियो ने रंजिशन उसके बेटे अजय पर जानलेवा हमला कर दिया। आरोपी गांव के अमित वर्मा व लडडू पुत्रगण सुरेश ने लाठी डंडे व कुल्हाडी से लैस होकर उसके बेटे के साथ गालीगलौज शुरू की। मना करने पर आरोपियों ने जानलेवा हमला बोल दिया। हमले मे पीडिता के बेटे के सिर में गंभीर चोटें आ गयी। शोर मचाने पर आरोपियों ने जानलेवा धमकी दी। घायल को इलाज के लिए लालगंज ट्रामा सेण्टर लाया गया। यहां प्रारंभिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। तहरीर के आधार पर पुलिस ने रविवार की रात आरोपी अमित समेत दो नामजद तथा पांच अज्ञात के खिलाफ गंभीर धाराओ मे केस दर्ज किया है। वहीं कोतवाली के दरोगा रमेश कुमार वर्मा ने घटना के एक आरोपी अमित वर्मा को सोमवार की सुबह ताजपुर गांव में बगिया के समीप धर दबोचा। पुलिस ने आरोपी को जेल भेज दिया है। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव का कहना है कि केस दर्ज किया गया है। शेष आरोपियों को भी हिरासत मे लेकर जेल भेजा जाएगा।

फायर कर्मियों ने लोगों को किया जागरूक

पट्टी। अग्निशमन सेवा दिवस के मौके पर फायर विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा कस्बे में ग्रामीणों को आग से बचाव के उपायों की जानकारी देने के साथ पंपलेट भी वितरित किए। फायर विभाग के अधिकारी आदर्श कुमार की अगुवाई में फायर विभाग के कर्मचारियों द्वारा आग से बचाव के विभिन्न उपायों की जानकारी दी गई। जिसमें घर के भीतर बिजली के कटे-फटे तारों की मरम्मत, रात में सोने से पहले गैस सिलेंडर का बल्ब बंद करना, गैस सिलेंडर में लीकेज का आभास होते ही सिलेंडर को बाहर खुले स्थान पर निकाल कर रखना तथा लीकेज को बंद करने का प्रयत्न करना। अपने मकान एवं दुकान तथा कारखाने के पास आग बुझाने वाले फायर हाइड्रेंट या पानी के अन्य स्त्रोतों की जानकारी रखने की सलाह दी। फायर विभाग के इस कार्यक्रम में सोहन लाल यादव, योगेंद्र यादव, अश्विनी प्रसाद समेत तमाम फायर कर्मी मौजूद रहे।

बच्चों ने केक काटकर मनाया बाबा साहब का जन्मदिन

प्रतापगढ़। संविधान के शिल्पकार डाक्टर भीमराव अंबेडकर बाबा साहब की जयंती बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप के बच्चों ने केक काटकर धूमधाम से मनाई। इस अवसर पर बाबा साहब की झांकी सजाई गई। बच्चों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया। भंगवा गांव में बच्चा बैंक के निशुल्क स्टडी सेंटर पर सोमवार को बच्चे जुटे। समीर ने बाबा साहब की भूमिका निभाई। टीचर दामिनी और शनि ने देश के लिए बाबा साहब द्वारा किए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। संचालन हिमांशु और साहिल ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर रागिनी, राधिका, नितिन, साहिबा समेत ढेर सारे छात्र और छात्राएं शामिल हुई।

बैठक में बाबा साहब को किया याद

प्रतापगढ़। सोमवार को अपना दल कमेरावादी की मासिक बैठक रानीगंज विधानसभा के संसारपुर स्थित बीआर पटेल इंटर कालेज में आयोजित किया गया। जिसमें डा. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर बौद्धिक मंच के जिलाध्यक्ष सतीश पटेल ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बाबा साहब के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही संगठन के पदाधिकारियों के साथ पार्टी की नीतियों पर चर्चा की गई। इस दौरान जिलाउपाध्यक्ष अशोक कुमार, जिलाध्यक्ष अल्पसंख्यक प्रकोष्ठतौहीद अहमद,लालता प्रसाद जिला सचिव,इंद्रबहादुर पटेल विधान सभा अध्यक्ष रानीगंज,शुभम यादव बौद्धिक मंच विधान सभा अध्यक्ष रानीगंज,भोला राम विधान सभा सचिव,हनुमान, मोहन लाल आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

डाक्टरों ने मनाई बाबा साहब की जयंती

प्रतापगढ़। राजा प्रताप बहादुर अस्पताल में दलितों के मसीहा कहे जाने वाले शिल्पी बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई। इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ शैलेंद्र कुशवाहा, फिजिशियन डाक्टर मनोज खत्री, रमेश पांडे,लक्ष्मीकांत मिश्रा,अनिल सरोज, विजय यादव, सौरभ और संतोष देवी समेत अन्य लोग मौजूद थे।

कथा को लेकर कलश यात्रा आज

लालगंज। नगर के सरस्वती रोड पर श्रीमदभागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ को लेकर आज मंगलवार को सुबह नौ बजे कलश शोभा यात्रा निकाली जाएगी। कथाव्यास आचार्य पं. राघव रामानुजदास के द्वारा दोपहर तीन बजे से कथा का शुभारंभ होगा। यह जानकारी संयोजक पं. शिवकृपाल शुक्ल ने दी है।

ब्लॉक, तहसील एवं थाने स्तर से ही शिकायतों का हो गुणवत्तापूर्ण निस्तारण : उपमुख्यमंत्री

जल जीवन मिशन के तहत करायें गये कार्यों की गुणवत्ता की करायें जांच- उपमुख्यमंत्री, उ0प्र0

कौशाम्बी। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के द्वारा सोमवार को नवनिर्मित नगर पालिका परिषद भरवारी के कार्यालय में जनपद के विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की गई। उपमुख्यमंत्री ने समीक्षा बैठक के दौरान अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति परेशानी लेकर हमारे पास ना आए, इसके लिए सभी अधिकारियों के द्वारा ब्लॉक, तहसील स्तर एवं थाने स्तर से ही उनकी शिकायतों का निस्तारण सुनिश्चित होना चाहिए, जिससे उन्हें इधर-उधर न भटकना पड़े, इस पर किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को सभी जनप्रतिनिधियों का सम्मान करने तथा उनकी बातों को गम्भीरता से सुनते हुए, उनके मामलों पर नियमानुसार शीघ्रता के साथ कार्यवाही करने के लिए कहा है। उपमुख्यमंत्री ने राम वन गमन मार्ग के कार्यों की प्रगति के संबंध में जानकारी लेते हुए कहा कि इस कार्य की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आनी चाहिए। उन्होंने कार्य को निर्धारित समय सीमा के अंदर पूर्ण कराये जाने के निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिए है। उन्होंने कहा कि जनपद में बनाए जा रहे सभी आरओबी 2025 तक बनकर तैयार हो जाये तथा जनता के लिए खुल जाये। उन्होंने जिलाधिकारी को जल जीवन मिशन के तहत बनायी गयी टंकियों की गुणवत्ता की जांच कराने के निर्देश दिए। कहा कि अगर टंकियों की गुणवत्ता में गड़बड़ी पाई जाए तो संबंधित के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जेल भेजने की कार्रवाई की जाय। उपमुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि अगर कोई भी अधिकारी/ कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त पाया जाए तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए सेवामुक्त करने की कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि मनरेगा के तहत गांव में गलियों एवं नालियों का निर्माण इस तरीके से किया जाए, जिससे जल निकासी की व्यवस्था बनी रहे। चक मार्गो के निर्धारण की प्रक्रिया में तेजी लाई जाए। गलत विद्युत बिलिंग से सम्बंधित प्राप्त शिकायत पर अधिशासी अभियन्ता विद्युत को ऐसे प्रकरणों पर लापरवाह विद्युत कर्मियों पर कड़ी कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जनप्रतिनिधियों के माध्यम से अगर कोई प्रस्ताव आए तो उन्हें तुरंत शासन को प्रेषित किया जाए, राम वन गमन मार्ग पर हो रहे सड़क निर्माण कार्यो से धूल उड़ने की शिकायत पर कहा कि ऐसी जगहो पर लगातार पानी का छिड़काव किया जाए। उन्होंने कहा कि जनपद में आवास योजनाओं में गड़बड़ियों की शिकायत प्राप्त हो रही है अपात्रों को पात्र और पात्रों को अपात्र किया जा रहा है इस पर जिलाधिकारी को जॉच कर संबंधित के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के लिए कहा है। इस अवसर पर जन प्रतिनिधिगण सहित जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी, पुलिस अधीक्षक बृजेश श्रीवास्तव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

भवंस मेहता महाविद्यालय में धूमधाम से मनाई गई बाबा साहब की जयंती

भरवारी कौशाम्बी भवंस मेहता महाविद्यालय ,भरवारी में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई। सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर प्रबोध श्रीवास्तव ने बाबा साहब के छायाचित्र पर माल्यार्पण किया ,इसके उपरांत सभी शिक्षकों और छात्र-छात्राओं द्वारा बाबा साहब के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित किया गया। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के बारे में सर्वप्रथम डॉ. सी.पी श्रीवास्तव ने बोलते हुए बताया की बाबा साहब के जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए उन्होंने उनके शिक्षाप्रद बातों का उल्लेख करते हुए यह बताया की संविधान हमारे जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण अंग वो केवल एक व्यक्ति के जीवन की रक्षा नहीं करती अपितु ये पूरे देश को एक सिस्टम में बांधने की कोशिश करती है। इसलिए हमें बाबा साहब को हमेशा याद रखना चाहिए। कार्यक्रम को आगे संबोधित करते हुए कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर प्रबोध श्रीवास्तव ने बोलते हुए कहा की सर्वप्रथम हमें आज के आधुनिक जमाने में मोबाइल में भारत का संविधान जरूर रखना चाहिए और इसका अध्ययन करना चाहिए।अध्ययन करने से न केवल हम संविधान को जानेंगे अपितु अपने अधिकारों अपने कर्तव्यों के बारे में भी आसानी से जान पाएंगे। उन्होंने आगे बोलते हुए कहा की महिलाओं को अपने जीवन में बाबा साहब को जरूर याद रखना चाहिए विशेष कर हिंदू महिलाओं को क्योंकि उनके अधिकारों की सर्वाधिक सुरक्षा बाबा साहब द्वारा ही किया गया। इसके उपरांत कार्यक्रम को प्रोफेसर श्वेता यादव और राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर धर्मेंद्र कुमार अग्रहरि ने भी संबोधित किया और बाबा साहब के जीवन के सुखद पहलू को सामने रखा और उन्हें अपने जीवन में उतारने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया ।इस अवसर पर बच्चों द्वारा बाबा साहब के जीवन पर आधारित कुछ कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।कार्यक्रम में प्रोफेसर योगेश मिश्रा, डॉक्टर दीपक ,डॉक्टर मनीष ,डॉक्टर संजू आदि लोग उपस्थित रहे।

अंबेडकर जयंती पर धर्मा देवी इण्टर कॉलेज में भाषण निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन

कौशाम्बी धर्मा देवी इण्टर कॉलेज केन कनवार में डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर भाषण, निबन्ध आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।सार्वप्रथम विद्यालय के विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. रामकिरण त्रिपाठी एवं शिक्षकों के द्वारा बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये भाषण प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। जिसमें साक्षी मिश्रा को प्रथम स्थान,सिद्धार्थ सिंह को द्वितीय स्थान तथा रुद्र प्रताप को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इसी क्रम में आयोजित हुयी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में अंजली देवी को प्रथम स्थान,शेफा फातमा को द्वितीय स्थान तथा अनुराग कुमार को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। स्थान प्राप्त करने वाले समस्त छात्र छात्राओं को मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रबंधक शिक्षक छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

अझुवा में मनाई गई अंबेडकर जयंती,लोगों ने डीजे के साथ निकाली शोभायात्रा

अझुवा कौशांबी संविधान निमार्ता और सामाजिक न्याय के प्रतीक बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती को नगर पंचायत अझुवा में पूरे सम्मान और श्रद्धा के साथ मनाया गया विभिन्न सामाजिक संगठनों संस्थाओं और आम नागरिकों द्वारा जुलूस गोष्ठियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। आदर्श नगर पंचायत अझुवा कार्यालय में चेयरमैन शांति देवी कुशवाहा और सम्मानित जनों ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया है चेयर मैन शांति देवी कुशवाहा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा समाज को एकता और समानता के शिक्षा के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बाबा साहब का जीवन प्रेरणा का स्त्रोत है और उनके दिखाएं रास्ते पर चलकर ही हम की एक समतामूलक समाज की स्थापना कर सकते हैं ।चेयरमैन प्रतिनिधि ओम प्रकाश कुशवाहा ने कहा बाबा साहब ने जिस तरह सामाजिक भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई और भारत के संविधान की नींव रखी वह हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है आज हमें उनके सिद्धांतों को आत्मसात करने की जरूरत है खासकर युवाओं को उनके विचारों से जुड़ना चाहिए। वहीं महेश गौतम,कुलदीप गौतम सहित सैकड़ों महिला पुरुषों ने बाबा साहब भीम राव अंबेडकर की जयंती पर डीजे के साथ शोभायात्रा निकाली है शोभायात्रा में शामिल सैकड़ों लोगों का वार्ड नंबर 3 शांतिनगर अशोक गौतम के आवास पर जलपान कराया गया है इस अवसर पर महिला बुढ्ढे,नवयुवक बच्चे डीजे की धुन पर थिरकते नजर आए हैं वहीं अ झु वा चौकी पुलिस सुरक्षा हेतु मुस्तैद रही है।

चायल इलाके में सोमवार को मनाई गई संविधान रचयिता की 134वीं जयंती

कौशाम्बी। कसेंदा गांव में सोमवार को डा.भीमराव अंबेडकर जयंती मनाई गई। मुख्य अतिथि कांग्रेस पाटी के पूर्व जिलाध्यक्ष तलत अजीम मौजूद रहे। उन्होंने बाबा साहब के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डा. भीमराव अंबेडकर भारतीय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने दलितों के साथ किए जाने वाले सामाजिक भेदभाव के खिलाफ अभियान चलाया। मुख्य अतिथि तलत अजीम ने कहा कि अंबेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि, विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के शोध कार्य में ख्याति प्राप्त की। जीवन के प्रारंभिक कैरियर में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे। उन्होंने 1956 में बौद्ध धर्म अपना लिया। उन्हें 1990 में भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान मरणोपरांत सम्मानित किया गया। ग्राम प्रधान सुखलाल यादव ने कहा कि बाबा साहब ने श्रमिकों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया था। वह स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री एवं भारतीय संविधान के प्रमुख वास्तुकार थे। इस मौके पर रमेश गौतम और कमलेश गौतम की अगुवाई में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर कमलेश कुमार, रमेश कुमार, शनि भारतीया, उमेश कुमार, शिवालाल, रामसजीवन, शिवभवन, लवकुश, संतोष कुमार और मेवालाल आदि मौजूद रहे।

विद्यार्थी परिषद ने मनाई बाबा साहब की जयंती

कौशाम्बी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कौशांबी जिले के कार्यकताओं द्वारा सिराथू तहसील के अझुआ नगर में बाबा साहब डॉ भीम राव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर एसएफएस द्वारा प्रतिदिन चलने वाली परिषद की पाठशाला में जयंती मनाई गई एवं बच्चों पठन पाठन की सामग्री और मिठाई बांटी गई जिसमें प्रांत कार्यकारिणी सदस्य अर्जुन प्रसाद वर्मा सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के चित्र पर डीएम ने माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन किया अर्पित

कौशाम्बी। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर की जयन्ती के अवसर पर जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार प्रबुद्ध सिंह ने सम्राट उदयन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के जीवनदर्शन, आदर्श एवं व्यक्तित्व से बहुत कुछ सीखने को मिलता है, हम सभी लोगों को उनके जीवन आदर्शो को अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने बहुत ही विषम परिस्थितियों में शिक्षा ग्रहण की, उनके लिखित पुस्तकों के अध्ययन से पता चलता है कि उनके सोंचने का दर्शन अद्वितीय था। उन्होंने समाज में पिछड़े वर्गो को जोड़ने का आवाह्न किया। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर आजाद भारत के प्रथम कानून मंत्री थे। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर द्वारा किये गये कार्यों की जितनी सराहना की जाय, उतनी ही कम है। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने विश्व भर के संविधानों का गहन अध्ययन कर भारतीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए सबसे बेहतर संविधान का निर्माण किया।अतिरिक्त मजिस्ट्रेट राजेश प्रसाद ने कहा कि डॉ0 भीमराव आम्बेडकर का शिक्षा पर विशेष बल था। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने स्त्री शिक्षा एवं महिलाओं को आगे बढ़ाने में भी विशेष कार्य किया, जिसका परिणाम है कि बेटियॉ आज सभी क्षेत्रों में बेहतर कार्य कर देश के विकास में योगदान कर रहीं हैं। भारतीय संविधन को तैयार करने वाली प्रारूप समिति का नेतृत्व बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने किया, इस संविधान के बल पर भारत ने अभूतपूर्व विकास किया है, ऐसे महापुरूष का यह देश हमेंशा ऋणी रहेंगा। इस अवसर पर नाजिर कलेक्ट्रेट सुनील सिंह सहित कलेक्ट्रेट के समस्त कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती पर दिव्यांगजनों को सीडीओ ने दी ट्राईसाइकिल

कौशाम्बी डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के शुभ अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी द्वारा 10 दिव्यांगजनों को ट्राईसाइकिल वितरण किया गया। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा दिव्यांगजनों से दिव्यांग पेंशन के बारे में पूछा गया तो दिव्यांगजनों ने बताया कि उन्हें दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा ससमय दिव्यांग पेंशन प्राप्त हो जाती है। सभी दिव्यांगजन ट्राईसाइकिल पाकर दिव्यांगजन बहुत खुश हुये और मुख्य विकास अधिकारी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी को निर्देशित किया गया कि जनपद में कोई भी दिव्यांगजन पेंशन, कृत्रिम सहायक उपकरण एवं दिव्यांगजनों के लिए संचालित किसी भी सरकारी सहायता से वंचित नही रहने चाहिए । इस अवसर पर परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, डी0सी0 मनरेगा, जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

धूमधाम से मनाई गई डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती

हर्रायपुर कौशाम्बी भरवारी नगर पालिका परिषद भरवारी अंतर्गत वार्ड नं21 दुर्गा भाभी नगर उर्फ रघुनाथ पुर कालोनी के पार्षद प्रतिनिधि मो. हसनैन मंसूरी ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण किया इसके उपरांत बाबा भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर मूरतगंज बाजार में डीजे की धुन पर एक विशाल रैली निकाली गई और लोगों को बाबा के जीवन के बारे में विस्तार से बताया गया उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान निमार्ता, भारत रत्न, देश के प्रथम कानून मंत्री, गरीबों, मजदूरों, कामगारों, दलितों, पिछड़ों, शोषितों, वंचितों,और महिलाओं को सम्मान, अधिकार, सुख, समृद्धि, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आरक्षण के माध्यम से मजबूती प्रदान करने वाले महामना, महामानव, विश्वविद्वत, असाधारण व्यक्तित्व के महान समाज सुधारक, सामाजिक समरसता के: हर वर्ष 14 अप्रैल को देश में संविधान निमार्ता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई जाती है. उन्हें बाबा साहेब भी कहा जाता है. डॉ. अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान पर हुआ था. उनके पिता का नाम रामजी मलोजी सकपाल और माता का नाम भीमाबाई था. उनका जीवन कठिनाइयों से भरा था लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी और अपनी मेहनत से देश के सबसे बड़े कानून विशेषज्ञ और समाज सुधारक बने. बाबा साहेब का संघर्ष और सफलता आज भी लाखों लोगों को प्रेरणा देता है और इस मौके पर सभी रैली में एकत्रित लोगो को शरबत पिलाया और इस मौके तुफैल अहमद ,गुड्डू अहमद, डॉ.नरेन्द्र कुमार आदि लोग एकत्रित रहे।

डीजे बाजा के साथ निकली मूरतगंज बाजार में रैली

धूमधाम से मनाई गई डॉ भीम राव आंबेडकर का 134 वा जन्मोत्सव

कोखराज कौशांबी सिराथू तहसील क्षेत्र के कशिया पश्चिम ग्राम में 14 अप्रैल को हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कशिया पंचायत में भारत रत्न संविधान निमार्ता ,अवॉर्ड से सम्मानित संविधान निमार्ता बाबा भीमराव अंबेडकर की 134 वी जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाई गई है बाबा साहेब की जयंती के उपलक्ष्य में ग्राम पंचायत में हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हुए डॉ भीम राव अम्बेडकर के जयन्ती पर एक भब्य रैली का भी आयोजन किया गया ग्रामीणों के द्वारा डीजे के साथ रैली निकालकर ग्रामीण क्षेत्र में भ्रमण कर उनके विचारों की चर्चा व संगीत से लोगों को जागरूक किया गया ग्रामीणों द्वारा चबूतरे के आसपास साफ सफाई रंग रोगन कर साज सज्जा व फूल माला से सजाया गया जिसमें ग्रामीणों व ग्राम पंचायत के जनता बडे. बजुर्ग बच्चों ने बडे धूमधाम से डॉ भीमराव आंबेडकर के जन्मोत्सव को मनाया व प्रभात फेरी भी ग्राम पंचायत के मजरो व पुरवा में भी घुमाई गयी उपस्थित लोगों को कमेटी के सदस्यों ने नाश्ता व जलपान की ब्यवस्था भी कराई गई थी इस मौके पर तमाम गणमान्य लोगों व ग्राम पंचायत की सैकड़ों जनता पुरुष व महिलाओं ने पुष्प व माल्यार्पण किया व कमेटी के सदस्य ने हजारों लोगों को जलपान व्यवस्था भी करायी गयी।

बाबा साहब की जयंती पर महामाया राजकीय महाविद्यालय में संगोष्ठी आयोजित

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय में 14 अप्रैल को भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की 134 वी जयंती के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी भारतीय संविधान के निर्माण की प्रक्रियाके विषय पर आयोजित की गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो0 शैलेन्द्र तिवारी, प्राचार्य महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशांबी एवं मुख्य वक्ता डॉ0 अनिल कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर गणित महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशांबी ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती जी की प्रतिमा पर मालार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। मुख्य वक्ता डॉ0 अनिल कुमार ने कहा कि डॉ भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार थे. उन्होंने संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के तौर पर संविधान के मसौदे को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई उन्होंने संविधान में गरीबो,शोषितों वंचितों तथा महिला अधिकारों की वकालत किया। अध्यक्षता कर रहे हैं प्रोफेसर शैलेंद्र तिवारी प्राचार्य महामाया राजकीय महाविद्यालय ने कहा कि भीमराव अंबेडकर के लिए स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, और न्याय के दर्शन बहुत महत्वपूर्ण थे. ये दर्शन उनके मानववादी विचारों का हिस्सा थे. उन्होंने इनके आधार पर ही समाज में फैली असमानताओं से लड़ने और समाज को बेहतर बनाने की कोशिश की। संयोजन व संचालन डॉ0 अजय कुमार एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी द्वारा किया गया । धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 रीता दयाल ने किया। इस अवसर परमहाविद्यालय के प्राध्यापक प्रोफेसर अनिल कुमार सोनकर, डॉ0 नीलम बाजपेई , डॉ0 भावना केसरवानी, डॉ आनंद कुमार, डॉ0 रमेश चंद्र डॉ0 संतोष कुमार एवं डॉ0 शैलेश मालवीय तथा छात्र, छात्राएं उपस्थित रहे।

भाजपा के कार्यक्रम में उमड़ा बसपाइयों का जन सैलाब

भरवारी कौशांबी। नगर पालिका परिषद भरवारी में रसूलपुर गिरसा तिराहे पर बाबा भीमराव अंबेडकर की मूर्ति के अनावरण के अवसर पर कार्यक्रम स्थल पर भाजपा से ज्यादा बसपाइयों का जन समुदाय दिखाई पड़ा है दूर-दूर से बुलाई गई भीड़ के चलते कार्यक्रम स्थल अव्यवस्था की भेंट चढ़ता नजर आया है नगर पालिका अध्यक्ष कविता पासी ने एक तीर से दो निशाना लगाने वाला लंबा खेल खेला है जिसमें उपमुख्यमंत्री के सामने संविधान दिवस के दिन भवन का लोकार्पण दिखाने का प्रयास किया है कि आगामी 2027 के विधानसभा का चुनाव उनके लिए आसान होगा कार्यक्रम समाप्त होने के बाद काफी पार्षदों ने उपमुख्यमंत्री से कविता पासी की शिकायत भी की है पार्षद शंकर लाल केशरवानी में एक टैंकर पानी मंगवाया तो अध्यक्ष के आउटसोर्सिंग कर्मचारियों ने कहा कि पार्षद है या कोई भी हो वह मुझसे पानी का टैंकर मांगे और साथ में 1000 भी दे तभी पानी का टैंकर मिलेगा नगर पालिका के इस कारनामे से कार्यक्रम स्थल पर पहुंची जनता भीषण गर्मी में पानी से व्याकुल इधर एक लोटा पानी के लिए भटकती दिखाई पड़ी है बागी पार्षदों का कहना है कि अध्यक्ष का चढ़ाया भूत है जिसके चलते आउटसोर्सिंग कर्मचारी हेमराज अपनी गुंडाई और मनमानी पर उतारू हो जाता है कार्यक्रम स्थल पर खुलेआम तानाशाही देखी गई है कार्यक्रम के दौरान तानाशाही के चलते पूर्व अध्यक्ष और पूर्व सभासदों की उम्मीद पर पानी फेर दिया गया है पुरानी नगर पंचायत को उठाकर नवीपुर के जंगल में अपने तानाशाही स्वार्थ के चलते कार्यालय बनाकर नवनिर्मित भवन का लोकार्पण कराया गया है जिसका पूर्व अध्यक्ष और सभासदों ने खुलकर विरोध किया है इसके पहले कई अध्यक्ष और तमाम सभासद बने और भरवारी नगर पालिका का कार्यालय पर्याप्त था लेकिन ज्यादा बड़ा रूप देने के चलते नवीपुर रोही बायपास चौराहा के जंगल में कार्यालय बनाए जाने के बाद गांव क्षेत्र की गरीब कमजोर मजलूम जनता को कार्यालय तक पहुंचने में भारी दिक्कतों से जूझना पड़ेगा आवागमन का साधन न होने से कार्यालय तक पहुंचना नगर पालिका की गरीब जनता को कठिन होगा लोगों का कहना था की तानाशाही के चलते अध्यक्ष भरवारी का अस्तित्व खत्म कर अपना परचम लहराना चाहती है क्या नगर पंचायत से नगर पालिका परिषद बनाने में जिसने अहम भूमिका निभाई है नगर पालिका का दर्जा दिलाने वाले चायल के पूर्व विधायक संजय गुप्ता का योगदान किसी से छिपा नहीं है रोही बाईपास नबीपुर जंगल में कार्यालय बनाने के पहले क्या पूर्व अध्यक्ष और सभासदों से सलाह नहीं ली जा सकती थी कि भरवारी से दूर नबीपुर में कार्यालय बनाया जाए लेकिन नगर पालिका और नगर पंचायत के पूर्व चेयरमैन से बातचीत करने में वर्तमान अध्यक्ष कविता पासी को अपने मान मयार्दा में कमी आती दिखाई पड़ रही थी जिससे उन्होंने किसी से भी सलाह लिए बगैर नबीपुर जंगल में कार्यालय बना दिया है जो आम जनता के लिए मुसीबत का सबब होगा हमेशा पार्षदों की अपेक्षा चर्चा का विषय बना रहा है जिससे पार्षद लगातार विरोध करते रहे सड़क निर्माण हो या खड़ंजा निर्माण कार्य सभी कार्यों में अध्यक्ष की तानाशाही के चलते हमेशा पार्षदों ने विरोध किया है धरना प्रदर्शन किया है जिलाधिकारी से शिकायत किया है तमाम पार्षदों ने बोर्ड की बैठक का बहिष्कार किया है अध्यक्ष की तानाशाही के चलते तमाम पार्षदों ने उपमुख्यमंत्री से शिकायत की है शिकायत करने वालों में सानू कुशवाहा बच्चा केसरवानी शंकर लाल केशरवानी विराट गुप्ता विक्रम सिंह घनश्याम पासी सहित तमाम लोग शामिल रहे।

मेडिकल कालेज में मनाया गया डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती

कल्याणपुर कौशांबी। स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय संबद्ध संयुक्त जिला चिकित्सालय कौशांबी में डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती 14 अप्रैल को हर्षोल्लास के साथ मनाई गई।इस उपलक्ष्य में चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ सुनील कुमार शुक्ला ने सबसे पहले डॉ बी आर अंबेडकर की मूर्ति पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए। डॉ बी आर अंबेडकर की मूर्ति पर बारी बारी से चिकित्सालय के चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर विश्वप्रकाश डॉक्टर नंदनी राघव ,डॉक्टर धर्मराज सिंह सहित सभी डॉक्टर्स, चीफ फार्मासिस्ट बी एन सिंह,एवं समस्त स्टाफ ने संविधान निमार्ता डॉ बी आर अंबेडकर की मूर्ति पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए। इस मौके पर डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के जीवन पर प्रकाश डाला गया और उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद किया गया बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर चिकित्सालय परिवार की तरफ से मिष्ठान का वितरण किया गया।

गिरछा चौराहा अब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के नाम से जाना जायेंगा : उपमुख्यमंत्री

उपमुख्यमंत्री ने गिरछा चौराहा, में भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण एवं नवनिर्मित नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय का किया लोकार्पण, नवनिर्मित नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय अब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के नाम से जाना जायेंगा-उपमुख्यमंत्री

भरवारी कौशाम्बी उपमुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयन्ती के अवसर पर जनपद के रसूलपुर, गिरछा चौराहा में भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया। इसके उपरांत उपमुख्यमंत्री के द्वारा वार्ड 14, सोहाद नगर (नवीपुर) रोही बाईपास,भरवारी में नवनिर्मित नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय का लोकार्पण फीता काटकर किया। इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि मै भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयन्ती पर उनको शत-शत नमन करता हूॅ इसी के साथ मै यह घोषणा करता हूॅ कि गिरछा चौराहा और यह नवनिर्मित नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय अब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के नाम से जाना जायेंगा। उन्होंने कहा कि बाबा साहब का सपना था कि गरीबों,वचिन्तों बराबर का समाज में जीने का हक मिलें आज हमारी सरकार उनके सपने को सबका साथ सबका विकास के साथ पूरा कर रही है। बाबा साहब को असली सम्मान इस सरकार में मिला है प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री समर्पित होकर गरीबों का कल्याण कर रही है। बाबा साहब का सपना था समुदाय शिक्षित हो यह सरकार शिक्षा पर विशेष जोर दे रही है। आज डबल इंजन की सरकार में सभी गरीबों को पक्का घर देने का काम किया। बाबा साहब का जीवन बहुत संघर्षो में बीता है वे पूरा जीवन गरीबों एवं विन्चतों को मुख्य धारा से जोडने का कार्य करते रहे। इनके सपनों के साकार करने के लिए मा0 प्रधानमंत्री जी ने कई योजना चलाकर उससे गरीबों व वन्चितों को लाभान्वित कर कई करोड लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने का काम किया है बाबा साहब चाहते थे की कोई भी गरीब भूखा न रहे उनके सपने को अगर किसी ने सच में साकार किया है तो वे है हमारे मा0 प्रधानमंत्री जिन्होंने निःशुल्क राशन, पक्का मकान, शौचालय, गैस एवं निःशुल्क इलाज देकर गरीबी को खत्म करने एवं उन्हें मुख्य धारा से जोडने का काम किया। आज हर घर नल से जल का पहुॅचाने का काम किया साथ ही हर घर के अधेरे को खत्म कर विद्युत देने का काम किया है। पहले की सरकारों में भी योजनायें बनती थी लेकिन उसका लाभ आम आदमियों को नहीं मिलता था वे सारी योजनायें भष्ट्राचार की भेट चढ जाती थी लेकिन हमारी सरकार आज पारदर्शिता ढंग से कार्य करते हुए सीधे उनके खाते में पैसा दे रही है। पहले बिना रिसवत दिये नौकरी मिलना सम्भव नहीं था आज पूरी इमानदारी के साथ भर्तिया की जा रही है। आज हम सभी वादा करें कि बाबा साहब के जीवन से प्रेरणा लेकर देश को आगे बढायेगें। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर जी के जीवनदर्शन, आदर्श एवं व्यक्तित्व से बहुत कुछ सीखने को मिलता है, हम सभी लोगों को उनके जीवन आदर्शों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने बहुत ही विषम परिस्थितियां में शिक्षा ग्रहण की, उनके द्वारा लिखित पुस्तकां के अध्ययन से पता चलता है कि उनके सोंचने का दर्शन अद्वितीय था। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नगर पालिका परिषद कार्यालय का निर्माण 793.22 लाख की लागत से किया गया है कौशाम्बी में आज लगातार विकास कार्य किये जा रहे है। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद जनप्रतिनिधियों से कहा कि जो भी जनपद में विकास से सम्बन्धित प्रस्ताव हो हमें दे उस पर भी जल्द से जल्द कार्य किया जायेंगा पैसे की कमी नहीं है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर, भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मराज मौर्य, श्रीमती कविता पासी, राज्य महिला आयोग की सदस्य प्रतिभा कुशवाहा, चायल विधायक पूजा पाल, पूर्व सांसद विनोद कुमार सोनकर, पूर्व विधायक लाल बहादुर, पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता, पूर्व विधायक शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, सहित अन्य जनप्रनिधि उपस्थित रहे।

मुकदमा दर्ज करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार करना भूल गई पुलिस

कौशाम्बी। सप्ताह भर पहले गुरौली चौकी क्षेत्र के एक गांव में संदूक का ताला तोड़कर एक युवक नगदी और सोने-चांदी के जेवरात उठा ले गया है। युवक के विरुद्ध चोरी का मुकदमा दर्ज करने के बाद गुरौली चौकी पुलिस चोर को गिरफ्तार करके जेल भेजने में आनाकानी कर रही है। गिरफ्तारी व बरामदगी न होने से चोरी की घटना से पीड़ित महिला ने गुरौली चौकी पुलिस के ऊपर गंभीर आरोप लगाए हैं। कौशाम्बी थाना क्षेत्र के बेरौचा गांव निवासिनी लता देवी पत्नी मुकेश चन्द्र त्रिपाठी ने प्रार्थना पत्र के माध्यम से बताया कि प्रतिदिन की भांति दिनांक सात अप्रैल को लगभग शाम 7 बजे अपने घर से लगभग 100 मीटर की दूरी पर अपने ससुर के लिए खाना बनाने गयी थी। प्रार्थिनी सुसर को खाना बनाकर शाम 8 बजे अपने घर वापस आयी तो देखा कि घर का सारा सामान बिखरा हुआ था। बिखरे हुए सामान को देखकर प्रार्थिनी आश्चर्य चकित हो गयी तब उसको घर में चोरी की आशंका हुई। उसकी नजर सन्दूक की तरफ गई तो संदूक का ताला टूटा हुआ था और संदूक का सामान इधर-उधर बिखरा हुआ था तथा सोने-चांदी के जेवरात सहित संदूक के अंदर रखा पैसठ हजार सात सौ रूपया भी गायब था, जिसके बाद प्रार्थिनी ने पश्चिम शरीरा थाना थाना क्षेत्र के सूरज शुक्ला पुत्र सुग्गी लाल के विरुद्ध प्रार्थना पत्र देकर चोरी का मुकदमा दर्ज कराया। चोरी का मुकदमा दर्ज कर पुलिस आरोपी को गिरफ्तार करना भूल गई है, जिसके चलते चौकी पुलिस की निष्ठा पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

सम्पादकीय

आगरा में उड़ीं संविधान की धज्जियां

शनिवार को उत्तर प्रदेश के आगरा के गढ़ीरामी गांव में राणा सांगा की जयंती के अवसर पर जिस तरह से क्षत्रिय करणी सेना ने 'रक्त स्वाभिमान सम्मेलन' का आयोजन किया वह शक्ति प्रदर्शन तो था ही, उससे बढ़कर वह संविधान की धज्जियां उड़ाने वाला कार्यक्रम साबित हुआ। क्षत्रिय समुदाय के देश भर से लोग यहां एकत्र हुए थे। इसमें एक ओर तो सीधे-सीधे हथियारों का जंगी प्रदर्शन किया गया, वहीं दूसरी तरफ मारने-काटने की सरेआम बातें हुईं।

समाजवादी पार्टी के सांसद रामजी लाल सुमन के खिलाफ वक्ताओं ने गुस्सा तो उतारा ही, उन्हें मार डालने की खुली धमकियां दी गयीं जबकि वहां पुलिस की बड़े पैमाने पर तैनाती थी। किसी अनहोनी की आशंका में प्रशासन ने भारी सुरक्षा व्यवस्था की थी। याद हो कि पिछले दिनों सुमन ने संसद मे एक बयान में राणा सांगा को यह कहकर 'गद्दार' करार दिया था कि बाबर को भारत में वे ही बुलाकर लाये थे। इसे लेकर क्षत्रियों में गहरी नाराजगी है। करणी सेना के कुछ लोगों ने तो सुमन की जुबान काट लेने वाले के लिये पुरस्कार तक घोषित किया था। यदि उनके खिलाफ कार्रवाई की गयी होती तो यह नौबत न आती।

सम्मेलन में देश भर से पहुंचे क्षत्रिय समुदाय के लोग तलवारें लहराते दिखे और मंच पर से उन्होंने बहुत आक्रामक भाषण दिये। इन भाषणों में आए लोगों ने रामजी लाल सुमन के खिलाफ नाराजगी जताई। एक व्यक्ति ने मंच से खुले आम कहाः 'जो राणा सांगा के खिलाफ बात करेगा, उसे 'अपने हिसाब से दंड' दिया जाएगा।' संयुक्त करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष राज शेखावत ने धमकी दी कि रामजी लाल सुमन की उनके घर में घुसकर हड्डी तोड़ी जायेगी। उन्होंने साफ कहा कि, 'कभी तो उनकी सुरक्षा में चूक होगी, तब उनकी कुटाई होगी। संविधान का डर नहीं, कुटाई से डराया जा सकता है।' चम्बल की बैंडिट क्वीन फूलन देवी की हत्या में दोषी पाये गये शेर सिंह राणा भी कार्यक्रम में आए थे। उन्होंने मांग की कि सुमन पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) की धाराएं लगाई जायें। उन्होंने सांसद की सदस्यता रद्द कर उन्हें जेल भेजने की भी मांग की। पूर्व राजपूत करणी सेना अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी, जिनकी पिछले दिनों उनके घर में घुसकर हत्या कर दी गयी थी, की पत्नी शीला भी मंच पर थीं। उन्होंने कहा- 'हमें गर्व है कि हम राणा सांगा के वंशज हैं। कोई गद्दार हमारे भगवान पर सवाल उठाता है, तो उसे देश में रहने का अधिकार नहीं है।' करणी सेना के क्षेत्रीय अध्यक्ष ओकेंद्र राणा ने तो और एक कदम आगे बढ़ते हुए कहा कि अब माफी से भी काम नहीं चलने वाला। करणी सेना के कार्यकर्ता कुछ भी कर सकते हैं।

वैसे भारतीय जनता पार्टी के एक विधायक धर्मपाल सिंह चौहान ने कार्यक्रम में पहुंचकर आयोजकों से ज्ञापन लिया और आश्वासन दिया कि करणी सेना की मांगों को वे सरकार तक पहुंचायेंगे। कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात करणी सेना के लोगों हाईवे को अवरूद्ध कर दिया था। वे सुमन के निवास की ओर जाना चाहते थे। उनके इस प्रयास को पुलिस ने विफल कर दिया।

राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे डॉ भीमराव अंबेडकर

- गणेश कछवाहा

नेतागण जिस लोकतंत्र की बात कर रहे हैं वो मालिकों का जनतंत्र है। वे जिस तथाकथित लोकशाही की बार-बार दुहाई दे रहे हैं वो मालिकों की लोकशाही है। इसके विपरीत भीमराव अंबेडकर का मानना था जब तक पूंजीवाद कायम है तब तक सही मायनों में न स्वतंत्रता संभव है और न समानता। वास्तव अर्थ में समानता हासिल करने के लिए पूंजीवादी व्यवस्था को बदलना होगा उसके बाद ही वास्तविक अर्थ में समानता प्राप्त की जा सकती है।

दलित सामाजिक संघर्षों के प्रणेता,भारतीय संविधान के निमार्ता और लोकतंत्र के प्रबल समर्थक डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने स्वतंत्रता की वकालत तो की, लेकिन उनका मतलब केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं थी, बल्कि सामाजिक स्वतंत्रता एक प्रमुख लक्ष्य था। स्वतंत्रता के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यापक था।

उनका मानना था कि 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सामाजिक स्वतंत्रता के बीच बहुत बड़ा अंतर है। इसे समझे बिना हम सही और पूरी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकते थे। भारत को अगर एक विदेशी देश की गुलामी से मुक्त किया जाए तो उसे राजनीतिक स्वतंत्रता मिलती है, लेकिन फिर भी स्वतंत्र भारत के लोग स्वतंत्र नहीं होते हैं। क्योंकि विदेशी शासकों के जाने पर राजनीतिक दासता समाप्त तो हो जाती है,परंतु उनके जाने के बाद भी उस देश के लोगों की दासता जारी रहती है, उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता नहीं मिलती है। तो इसे हम पूरी आजादी या स्वतंत्रता कैसे कह सकते हैं।'

- डॉ. बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

समान अवसरों और अधिकारों से अनेकों वर्षों से वंचित रहे बहिष्कृत अछूत समाज को जब तक गुलामी के जंजीरों से मुक्त नहीं किया जाता, उनकी दासता को मिटाने में जब तक स्थापित शासन को सफलता नहीं मिलती तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता केवल मुठ्ठी भर लोगों के हितों की रक्षा करेगी, और ऐसी स्वतंत्रता का कोई मतलब नहीं है।

बाबा साहेब ने महसूस किया कि सदियों से समान अवसरों और अधिकारों से वंचित रखे गए बड़े वर्ग के लिए केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने से लाभ नहीं होगा, वे राष्ट्रीय स्थापित मानकों विचारधाराओं के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाएंगे।

डॉ. बाबा साहब अंबेडकर का सामाजिक दर्शन तीन शब्दों - स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित है। बाबा साहेब समानता के सबसे बड़े समर्थक माने जाते हैं। उन्होंने जीवन भर समानता के लिए कड़ा संघर्ष किया।

सन- 1943 में इंडियन फेडरेशन के कार्यकताओं के एक शिविर में भाषण देते हुए अंबेडकर ने कहा -

'हर देश में संसदीय लोकतंत्र के प्रति बहुत असंतोष है। भारत में इस प्रश्न पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। भारत संसदीय लोकतंत्र प्राप्त करने के लिए बातचीत कर रहा है। लेकिन हमें बहुत सावधान रहने की जरूरत है। यह उतना बढ़िया उत्पाद नहीं है जितना दिखाई देता है ।'

इसी भाषण में आगे कहा कि -

'संसदीय लोकतंत्र कभी जनता की सरकार नहीं रही,न जनता के द्वारा चलाई जाने वाली सरकार रही। कभी ऐसी भी सरकार नहीं रही जो जनता के लिए हो।'

भीमराब अंबेडकर ने 1942 के रेडियो भाषण में स्वाधीनता, समानता और भाईचारा, इन तीन सूत्रों का उद्भव फ्रांसीसी क्रांति में देखा। उन्होंने कहा 'मजदूर के लिए स्वाधीनता का अर्थ है जनता के द्वारा शासन। संसदीय लोकतंत्र का अर्थ जनता के द्वारा शासन नहीं है।'

अंबेडकर ने संसदीय लोकतंत्र की व्याख्या करते हुए लिखा-'संसदीय लोकतंत्र शासन का ऐसा रूप है जिसमें जनता का काम अपने मालिकों के लिए वोट देना और उन्हें

हुकूमत करने के लिए छोड़ देना होता है।'

अंबेडकर ने लोकतंत्र को मजदूरवर्ग के नजरिए से देखा और उस पर अमल करने पर भी जोर दिया।

नेतागण जिस लोकतंत्र की बात कर रहे हैं वो मालिकों का जनतंत्र है। वे जिस तथाकथित लोकशाही की बार-बार दुहाई दे रहे हैं वो मालिकों की लोकशाही है। इसके विपरीत भीमराव अंबेडकर का मानना था जब तक पूंजीवाद कायम है तब तक सही मायनों में न स्वतंत्रता संभव है और न समानता। वास्तव अर्थ में समानता हासिल करने के लिए पूंजीवादी व्यवस्था को बदलना होगा उसके बाद ही वास्तविक अर्थ में समानता प्राप्त की जा सकती है।

इसके विपरीत नेतागण पूंजीवाद को बनाए रखकर ही नियमों में सुधार की बात कर रहे हैं।

अंबेडकर की नजर में वास्तविक स्वतंत्रता का अर्थ है सभी किस्म के विशेषाधिकारों का खात्मा। नागरिक सेवाओं से लेकर फौज तक,व्यापार से लेकर उद्योग धंधों तक सभी किस्म के विशेषाधिकारों को खत्म किया जाए। वे सारी चीजें खत्म की जाएं जिनसे असमानता पैदा होती है।

अंबेडकर की धारणा थी कि - 'लोकप्रिय हुकूमत के तामझाम के बावजूद संसदीय लोकतंत्र वास्तव में आनुवंशिक शासकवर्ग द्वारा आनुवंशिक प्रजा वर्ग पर हुकूमत है। यह स्थिति वर्णव्यवस्था से बहुत कुछ मिलती जुलती है। ऊपर से लगता है कोई भी आदमी चुना जा सकता है, मंत्री हो सकता है, शासन कर सकता है। वास्तव में शासक वर्ग एक तरह वर्ण बन जाता है। उसी में से,थोड़े से उलटफेर के साथ,शासक चुने जाते हैं। जो प्रजा वर्ग है, वह सदा शासित बना रहता है।' (संदर्भ- जगदीश्वर चतुर्वेदी, कोलकाता विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

डॉ. अंबेडकर सामाजिक समानता केलिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने गणितीय समानता या कृत्रिम समानता को स्वीकार नहीं किया। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं और क्षमताओं में एक स्वाभाविक भिन्नता होती है। बाबा साहब अंबेडकर का मानना था कि वंश, धर्म, जाति तथा सामाजिक स्थान ऐसे आधार पर भेदभाव करना समाजवादी व्यवस्था के साथ धोखा होगा।

डॉ भीमराव अंबेडकर को हमें आधुनिक मिथभंजक के रूप में देखना चाहिए। भारत और लोकतंत्र के बारे में परंपरावादियों, सनातनियों, डेमोक्रेट, ब्रिटिश बुद्धिजीवियों और शासकों आदि ने अनेक मिथों का प्रचार किया है। ये मिथ आज भी आम जनता में अपनी जड़ें जमाए हुए हैं। बाबा साहेब ने भारतीय समाज का अध्ययन करते हुए उसके बारे में एक नयी सोच पैदा की है। भारतीय समाज के अनेक विवादास्पद पहलुओं का आलोचनात्मक और मौलिक विवेचन किया है।

भारत में भक्त होना आसान है समझदार होना मुश्किल है। बाबा साहेब ऐसे विचारक हैं जो शूद्रों के सामाजिक ताने-बाने को पूरी जटिलता के साथ उद्घाटित करते हैं। बाबा साहेब के भी भक्तों में एक बड़ा तबका है जो दलित चेतना और दलित विचारधारा से लैस हैं। उन्हें भक्तों के आभा मंडल से बाहर निकलकर निश्चिंतता, चेतना सम्पन्न और डॉ बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के विचारधारा से लैस होकर सामाजिक स्वतंत्रता, समानता, उत्थान, राजनैतिक और संविधानिक अधिकारों की रक्षा के संघर्षों को आगे बढ़ाना ही डॉ बाबा साहब के सपनों को साकार करना होगा। बाबा साहेब का मानना था

कि - 'वह मनुष्य को मात्र मनुष्य नहीं रहने देती और आजाद भी नहीं। मनुष्य पूर्ण मनुष्य तभी बन सकता है जब वह अन्य से यह कहें कि समस्त प्राणी से बिना किसी स्वार्थ के पवित्र आत्मीय और प्रेम का रिश्ता बनाए।'

क्या मायावती अम्बेडकर के रास्ते पर हैं ? जयंती पर उठे सवाल

- शकील अख्तर

सामाजिक स्थिति मुसलमान की उन्हें कभी परेशान नहीं करती। हमेशा से ऐसी ही थी। लेकिन बढ़ी है दलित, पिछड़े, आदिवासी की। वह बर्दाश्त नहीं होती। संघ प्रमुख भागवत ने 2015 बिहार चुनाव से पहले आरक्षण के खिलाफ बयान दिया था ना। बुमरेंग कर गया। उल्टा असर। महागठबंधन जीत गया। उस समय नीतीश भी साथ थे। 2024 लोकसभा चुनाव से पहले कहा कि संविधान बदलना है। फिर उल्टा पड़ गया।

14 अप्रैल सोमवार को जब अम्बेडकर जयंती मन रही होगी और मायावती भी उन्हें याद करते हुए कांग्रेस और राहुल गांधी को कोस रही होंगी तो पार्टी के लोगों को उनसे पूछना चाहिए कि डा. अम्बेडकर कभी संघ जनसंघ में क्यों नहीं रहे? और क्या यह सही नहीं है कि कांग्रेस ने उनको सम्मानपूर्वक संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी का अध्यक्ष बनाया? और आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता के साथ क्या खुद डाक्टर अम्बेडकर ने यह नहीं कहा कि समिति में मुझसे ज्यादा योग्य लोग थे?

मायावती की पूरी राजनीति डा. अम्बेडकर के नाम पर है। लेकिन क्या उनके विचारों के हिसाब से जरा सा भी वे प्रतिगामी ताकतों से लड़ पा रही हैं? या दलितों के उद्धार के लिए बाबा साहब अम्बेडकर जिन ताकतों से जीवन भर संघर्ष करते रहे क्या वे उन्हीं दक्षिणपंथी ताकतों को मजबूत नहीं कर रही हैं?

सवाल बहुत सारे हैं। और अम्बेडकर जयंती वह समय है जब मायवती से यह सवाल पूछे जाना चाहिए। उनकी चुप्पी या सही जवाब से बचने के लिए राहुल गांधी पर सवाल उछाल देने से कुछ नहीं होगा।

शनिवार को आगरा में जिस तरह दलितों को गालियां दी गईं, तलवारें दिखाई गईं, बंदूकें उठाई गईं वह उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था के खतम हो जाने की तो एक मिसाल है। मगर दलितों के आत्मसम्मान को तोड़ने और उन्हें वापस उसी युग में पहुंचाने की कोशिश भी है जहां से बाबा साहब अम्बेडकर उन्हें बहुत मुश्किल से निकाल कर लाए हैं। संविधान देकर। वहीं संविधान जिसका प्रारूप (लिखने, ड्राफ्टिंग) बनाने के लिए कांग्रेस ने उन्हें इसका अध्यक्ष बनाया था।

समय बहुत खराब आ गया है। लोग सोचते रहे कि यह केवल मुस्लिम के खिलाफ हैं। मगर वह उन सबके खिलाफ हैं जो उन्हें वापस मनुवादी व्यवस्था में जाने से रोक रहा है। और यहां यह सबसे मजेदार बात है कि मुस्लिम को डायरेक्ट मनुवाद से कोई मतलब नहीं है। उस पर न लागू होता है और न वह किसी तरह प्रभावित।

मतलब जो भाजपा संघ का असली उद्देश्य है

मुस्लिम उसके बीच में एक बहाना भर है। मुस्लिम इसलिए कि उसका नाम लेकर डर दिखाकर दलित पिछड़े आदिवासी के वोट लेना और चार सौ पार होते ही संविधान बदल देना। आरक्षण खतम कर देना।

सामाजिक न्याय को यह भारतीय नहीं है कहकर खारिज कर देना। वर्ण व्यवस्था लागू कर देना। 2024 के चुनाव से पहले कहा ही था। भाजपा के लोगों ने ही कि चार सौ से ज्यादा सीटें संविधान बदलने के लिए चाहिए। सोचिए अभी जब संविधान लागू है। उनके अपने शब्दों में बहुत मजबूत सरकार है। डबल इंजन भी है फिर भी एक दलित सांसद के घर को 80 हजार करनी सेना की भीड़ दिन भर घेरे रखती है। खुली तलवारें, बंदूकें लहराई जाती रही हैं। गालियां दलित से लेकर पिछड़े सब को दी जाती रही हैं।

अखिलेश यादव की बहादुरी को सलाम करना होगा उन्होंने खुल कर इसका विरोध किया। कहा कि- यह सब भाजपा के लोग थे। इनसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। दलितों में निश्चित रूप से इससे साहस आया होगा। अखिलेश किसी एक जाति समूह की बात नहीं कर रहे थे। वे दलित पिछड़ा अल्पसंख्यक सबकी बात कर रहे थे।

पीडीए। बहुत अच्छा नाम रखा है उन्होंने। पी पिछड़ा, डी दलित और ए अल्पसंख्यक। अस्सी प्रतिशत से ऊपर आबादी। इसी को तलवार बंदूकें गालियां, धमकियों के जरिए डराने की कोशिश थी। मगर अखिलेश के बहादुरी भरे बयान के बाद सब जगह एक निश्चिंतता आई है।

मायावती अप्रासांगिक हो जाएंगी। अभी मौका है समझ जाएं। कल अम्बेडकर जयंती पर वही साहस दिखाएं जो बीजेपी का शासन आने से पहले था। 'चढ़ गुंडन की छाती पर' वाला। 11 साल से पहले दलित शहर की मुख्य सड़क पर यह नारा लगाता था चढ़ गुंडन की छाती पर मुहर लगाना हाथी पर। वह केवल बंधी हुई मुठ्ठी के साथ हाथ उठाता था। अभी जैसा आगरा में हुआ वैसा बंदूक, तलवार, गालियां नहीं। मगर उस खाली लहराते हाथ से गुंडे, सामंत सब डर जाते थे। अम्बेडकर की संगठित रहो शक्ति की सीख से। मायावती उसी से चार बार मुख्यमंत्री बनीं।

आज उनका एक भी लोकसभा सदस्य नहीं है। विधायक केवल एक। वह भी अपनी व्यक्तिगत सामर्थ्य की वजह से। दलित कोई विधायक भी नहीं। है तो डायलग फिल्मी। मगर खूब बोला जाता है और इस समय तो सही भी लगता है कि 'जो डर गया समझो वह मर गया!' मायावती ने अपने समाज के हौसले को मार दिया। जब हाथरस में दलित लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार हुआ। उसे मार दिया। रात में ही पुलिस ने पैट्रोल डालकर उसकी लाश जला दी। और इन सबके बाद पीड़िता के परिवार को ही परेशान किया जाने लगा। जैसा अभी आगरा में दलित सांसद रामजीलाल सुमन का घर घेर कर डर पैदा किया गया वैसा ही हाथरस में पीड़िता के परिवार के साथ किया गया।

मायावती नहीं गईं। राहुल, प्रियंका गए। और मायावती अपने घर में बैठकर ही राहुल और कांग्रेस को गालियां दिए जा रही हैं।

वह जो अलग-अलग तरीकों से सब कहते है कि नंबर सबका आएगा। तो वह आने लगा। पहले वे मुसलमानों के लिए आए, कुछ लोग बहुत खुश हुए। उस समय समझाया कि मुसलमान असली निशाना नहीं है। बहाना है। असली निशाना तो दलित आदिवासी पिछड़ा है। मुसलमान से क्या ले लेंगे? उनके पास क्या है ? लेना दलित आदिवासी पिछड़े से है। उसकी नौकरियां। उसके बच्चों का एडमिशन। वह कानून जो जातिगत गालियां देने से रोकता है। वह सामाजिक न्याय जो बराबरी का भाव देता है। वह स्वाभिमान जो जमीन पर नहीं साथ कुर्सी पर बिठा देता है। लालू जी के लिए बिहार का दलित पिछड़ा यही तो कहता है। क्या दिया लालू जी ने? हिम्मत। डर खतम कर दिया। बराबरी से बैठता है। बात करता है। जितने लोकगीत लालू जी पर बने होंगे। जीते जी किसी भारतीय नेता पर नहीं। यही सब वापस लेना है।

सामाजिक स्थिति मुसलमान की उन्हें कभी परेशान नहीं करती। हमेशा से ऐसी ही थी। लेकिन बढ़ी है दलित, पिछड़े, आदिवासी की। वह बर्दाश्त नहीं होती। संघ प्रमुख भागवत ने 2015 बिहार चुनाव से पहले आरक्षण के खिलाफ बयान दिया था ना। बुमरेंग कर गया। उल्टा असर। महागठबंधन जीत गया। उस समय नीतीश भी साथ थे। 2024 लोकसभा चुनाव से पहले कहा कि संविधान बदलना है। फिर उल्टा पड़ गया। 240 पर बीजेपी रुक गई। इसलिए मुसलमान को आगे किया जाता है। रोज नई कहानी लाई जाती है। लेकिन बार-बार सच सामने आ जाता है।

आगरा की तलवारें, बंदूकें इस बार केवल दलित पिछड़ों तक ही सीमित नहीं रहीं। चिंता ब्राह्मणों में भी दिखी। करनी सेना जिसने भाजपा सरकार के प्रश्रय में यह तांडव किया है वह राजपूतों की सेना मानी जाती है। उत्तर प्रदेश में ब्राह्मण बहुत पहले से कह रहा है कि उसे भी निशाने पर लिया जा रहा है। अब दलबदल कर भाजपा में मंत्री बन गए जीतीन प्रसाद ने तो ब्राह्मणों की रक्षा के लिए एक ब्रह्म सेना ही बनाई थी। आंकड़े दिए थे कितने ब्राह्मण मार डाले।

तो नफरत और विभाजन की राजनीति से बचेगा कोई नहीं। महिलाओं के खिलाफ तो जैसे हाईकोर्टों के फैसले आ रहे हैं वैसे इससे पहले कभी नहीं आए थे। निर्भया में पूरी सरकार लड़की परिवार के साथ थी। क्या मजाल की कोई गलत बोल जाए। आज तो कोर्ट कह रहा है कि बलात्कार में लड़की भी दोषी। यह माहौल का असर है। मीडिया तो गया ही काम से। ज्यूडिशरी भी चली गई।

कोई संविधानिक संस्था नहीं बची। संविधान में डा. अम्बेडकर ने ही इन संस्थाओं को बनाया था। अब उम्मीद जनता से ही है। उसे बचना भी है और देश व संविधान बचाना भी है।

अम्बेडकर से प्रेरणा लेने का कल सोमवार 14 अप्रैल को एक अच्छा मौका है। क्योंकि नेता तो बहुत हुए मगर जितना संघर्ष अम्बेडकर को करना पड़ा उतना किसी को नहीं। और इसे दलित एवं मायावती से ज्यादा कौन समझ सकता है।

डॉ भीमराव अंबेडकर की मनाई गई जयंती, उपस्थित रहे अधिकारी व माननीय

अखंड भारत संदेश

भदोही । स्वतंत्रता के अमृत काल में भारत रत्न बाबासाहब डा० भीमराव आंबेडकर के जन्म दिवस 14 अप्रैल, 2025 को भीमराव आंबेडकर जयन्ती हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान टैगलाइन के अंतर्गत 14 से 28 अप्रैल तक 15 दिवसीय कार्यक्रम उत्सव के रूप में शुभारभ व जनपदीय कार्यक्रम कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी विशाल सिंह एवं जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी, विधायक दीनानाथ भास्कर, विपुल दुबे द्वारा उपस्थित होकर बाबा साहब को श्रद्धांजलि अर्पित कर, प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं माल्यार्पण कर डॉ अंबेडकर जी के विचारों एवं संविधान निर्माण में उनके योगदान को रेखांकित किया गया । साथ ही विभिन्न कार्यक्रमों को धूम-धाम से आयोजित कर बाबासाहब के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

सपा कार्यालय में बाबा साहब की मनाई गई जयंती, मौजूद रहे जिले के सपा नेता

अखंड भारत संदेश

भदोही । समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय कंसापुर ज्ञानपुर में भारत रत्न संविधान के जनक बाबा साहेब डा.भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई

तथा उनके द्वारा चलाये गये सामाजिक न्याय के लिए लड़ाई को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया ,जिलाध्यक्ष प्रदीप यादव ने कहा कि बाबा साहेब डा. भीमराव आम्बेडकर नाम से लोकप्रिय,भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता,अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाजसुधारक थे। उन्होंने दलित बौद्ध आन्दोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था।वे स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री,भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निमार्ताओं में से एक थे।

एकजुट होकर बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर की देन व धरोहर 'संविधान और आरक्षण' बचाने के लिए पीडीए के आन्दोलन को नई ताकत प्रदान करें। 'सविधान ही संजीवनी है' और 'संविधान ही ढाल है' और ये भी कि जब तक संविधान सुरक्षित रहेगा, तब तक हम सबका मान-सम्मान-स्वाभिमान और अधिकार सुरक्षित रहेगा।

संचालन जिलामहासचिव हृदय नारायण प्रजापति, सोभनाथ यादव,आरिफ सिद्दीकी,श्यामला सरोज, रामयज्ञ पाल,सरिता बिंद, सन्तोष यादव,लालचन्द बिंद, केशनारायण यादव,रवि यादव, गुलाब पाल,दिलीप भीम कनौजिया,प्रमोद पाल आदि मौजूद रहे ।

चित्रकूट में अम्बेडकर जयंती बनी सामाजिक समरसता व राजनीतिक सक्रियता का प्रतीक

- संविधान, समता व संघर्ष का संकल्प
- शिक्षा शेरनी का दूध है : बाबा साहेब

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। संविधान निर्माता, शोषितों के मसीहा व भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती के मौके पर जिले में गांव से लेकर शहर तक उत्सव जैसा माहौल रहा। यह दिन न सिर्फ सामाजिक समता के प्रतीक के रूप में मनाया गया, बल्कि जिले की राजनीतिक, शैक्षणिक, और सामाजिक चेतना का भी अद्भुत संगम बना।

सुबह-सवेरे निकली बौद्ध महासभा की धम्म यात्रा ने पटेल तिराहे से होते हुए धुस मैदान तक सामाजिक जागरूकता का संदेश फैलाया। विचार गोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और संविधान पाठ जैसे आयोजनों में स्कूली बच्चों से लेकर वरिष्ठ चिकित्सक व बुद्ध अनुयायियों तक की भागीदारी रही। शिक्षा के क्षेत्र में भी बाबा साहब की जयंती को समर्पित कर, सदर ब्लॉक के मुस्लिम पुरवा प्राथमिक विद्यालय में संविधान की उद्देशिका का वाचन किया गया। शिक्षकों व छात्रों ने शिक्षा शेरनी का दूध है के मंत्र को आत्मसात कर बाबा साहब की विचारधारा को जीवंत किया।

राजनीतिक दलों ने भी इस दिन को अपने-अपने तरीकों से महत्व दिया। भारतीय जनता पार्टी ने जिला अध्यक्ष महेन्द्र कोटार्य के नेतृत्व में 852 बूथों पर कार्यक्रम किए, जिसमें पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र, पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, और पूर्व विधायक आनंद शुक्ला समेत अन्य दिग्गज नेता शामिल रहे।

वहीं कांग्रेस जिला कार्यालय में जिला अध्यक्ष कुशल सिंह पटेल की अगुवाई में कार्यक्रम हुआ। संविधान की रक्षा और समाज के कमजोर तबकों के अधिकारों की रक्षा को कांग्रेस ने बाबा साहब के सपनों की कसौटी बताया। इस मौके पर नए सदस्यों को पार्टी में शामिल भी किया गया। आप पार्टी ने बाबा साहेब के सपनों का भारत बनाने की प्रतिबद्धता जताई। जिला अध्यक्ष सन्तोषी लाल

अम्बेडकर जयंती पर जुलूस निकालते अम्बेडकर जयंती समिति

बेरोजगारी भत्ते की मांग करते पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष

अम्बेडकर जयंती मनाते माकपा कार्यकर्ता

शुक्ला के नेतृत्व में श्रद्धांजलि दी गई और सामाजिक समता की दिशा में कार्य करने का संकल्प दोहराया गया। उधर, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी व दलित महिला समिति ने गोष्ठी में संविधान पर मंडरा रहे संकट पर चिंता जताई गई। वक्ताओं ने संविधान विरोधी ताकतों के खिलाफ लामबंद होने का आह्वान करते हुए बाबा साहब की विरासत को बचाने का संकल्प लिया।

अंबेडकरवाद बना फोटो फ्रेम?

बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती पर आयोजित जुलूस इस बार उतनी जनभागीदारी नहीं जुटा सका, जितनी अपेक्षित थी। वजह? कुछ मौकापरस्त नेता केवल कैमरे की चमक में नजर आने के लिए कुछ समय के लिए जुलूस में आए-फोटो खिंचवाई और चलते बने। कुछ नेताओं ने तो 200-500 रुपये खर्च कर भीड़ में घुसकर ऐसी तस्वीरें खिंचवाईं, मानो बाबा साहब की विचारधारा के सबसे बड़े वाहक वही हों। हैरत की बात यह है कि इनमें कुछ बड़े राजनीतिक पदों पर आसीन नेता भी शामिल हैं, जिन्होंने बाबा साहब का नाम कैश कर राजनीति में ऊंचाई पाई है।

बेरोजगारी भत्ते की मांग

मऊ तहसील में अंबेडकर जयंती में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष व एमएलसी पद के पूर्व प्रत्याशी रघुनाथ द्विवेदी ने सर्व समाज के बेरोजगार युवाओं को बेरोजगारी भत्ता दिए जाने की मांग उठाई। कहा कि बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि तभी मानी जाएगी जब हर वर्ग के बेरोजगारों को आर्थिक सहारा मिले। वहीं, अपना दल अनुसूचित मोर्चा के जिलाध्यक्ष नारायण पासी ने जुलूस में शामिल लोगों को शरबत पिलाकर किया स्वागत।

अम्बेडकर जयंती मनाते विद्यालय के शिक्षक

अम्बेडकर जयंती मनाते कांग्रेसी

अम्बेडकर जयंती मनाते आप कार्यकर्ता

चित्रकूट को मिलेगा बाबा साहब का स्मृति स्थल : विधायक अनिल प्रधान

- जमीन को लिखा डीएम को पत्र
- विधायक का 2 लाख का ऐलान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भारत रत्न, संविधान निमार्ता परमपूज्य डॉ भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती के अवसर पर सदर विधायक अनिल प्रधान ने उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। यह कार्यक्रम विधायक कार्यालय चकमाली अमानपुर के शंकर ढाबा के पास बेड़ी पुलिया-कर्वी संपर्क मार्ग पर किया गया।

इसके बाद विधायक प्रधान भव्य अंबेडकर शोभायात्रा में शामिल हुए, जो कर्वी माफी से होते हुए ट्रैफिक चौराहा होकर धुस मैदान तक पहुंची। धुस मैदान में जनसमूह ने डॉ अंबेडकर के नाम पर पार्क की मांग रखी, जिस पर विधायक ने जानकारी दी कि वह पहले ही इस संबंध में डीएम को पत्र लिख चुके हैं। कहा कि चित्रकूट में बाबा साहब के नाम

विधायक अनिल प्रधान

का न कोई पार्क है, न कोई स्मृति स्थल। हमें एक ऐसी जगह चाहिए जहां उनके अनुयायी एकत्र होकर उन्हें स्मरण कर सकें। यदि जमीन उपलब्ध हो जाती है तो मैं अपनी विधायक निधि से मूर्ति स्थापना के साथ-साथ एक हॉल और कमरों का निर्माण कराऊंगा। आगे कहा कि अगर सरकार जमीन नहीं दे पा रही तो बाबा साहब के अनुयायी खुद जमीन खरीदने में सक्षम हैं। मैं 2 लाख रुपये चंदे में दूंगा। विधायक ने ममसी बुजुर्ग (ब्लॉक पहाड़ी) में अंबेडकर जयंती समारोह में भी सहभागिता की, जहां वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं व ग्रामीणों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

14 वर्षीय किशोरी ने लगाई फांसी, गाँव में पसरा मातम

चित्रकूट। जिले के थाना राजापुर क्षेत्र के ग्राम कनकोटा में शनिवार को एक 14 वर्षीय किशोरी की संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी लगाकर आत्महत्या करने की घटना से सनसनी फैल गई। मृतका की पहचान रेशमी निषाद पुत्री प्रवीण उर्फ मुरैला के रूप में हुई है। घटना की सूचना पर थाना प्रभारी प्रवीण सिंह पुलिस बल व फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचे। प्रारंभिक जांच में परिजनों ने कुछ स्पष्ट कारण नहीं बताए हैं, जिससे मामला और अधिक रहस्यमय बन गया है। फिलहाल शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। राजापुर पुलिस व फील्ड यूनिट द्वारा शव को कब्जे में लेकर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है। वहीं पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट व जांच के बाद ही घटना के पीछे के कारणों का खुलासा हो सकेगा।

कछुवा पुल के पास दर्दनाक हादसा, निमंत्रण से लौट रहे मजदूर को ट्रक ने रौंदा

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। राजापुर थाना क्षेत्र में शनिवार रात एक दर्दनाक हादसे में एक मजदूर की जान चली गई। मलवारा गांव निवासी राम सिंह कोरी (43) रिश्तेदारी में निमंत्रण से लौटते वक्त कछुवा पुल के पास ट्रक की चपेट में आ गए। ट्रक की टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि राम सिंह सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए और मौके पर ही दम तोड़ दिया।

मृतक की पत्नी सावित्री देवी ने बताया कि राम सिंह शनिवार को अलवारा गांव में एक रिश्तेदार के यहां निमंत्रण पर गए थे। रात को बाइक से लौटते समय जैसे ही वे कछुवा पुल के पास पहुंचे, तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी और चालक वाहन लेकर मौके से फरार हो गया। घटना की जानकारी नांदिन कुर्मियान गांव के प्रधान कैलाश सिंह ने जेब में मिले पहचान पत्र के जरिए परिजनों को दी। घायल को एंबुलेंस से राजापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हादसे के समय राम सिंह हेलमेट नहीं पहने हुए थे, जिससे सिर में गहरी चोटें आईं। घटना के बाद से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी है। फिलहाल ट्रक और चालक की तलाश की जा रही है।

गढ़चपा में गूंजा बाबा साहब अमर रहें, अंबेडकर जयंती पर उमड़ा जनसमूह

- ग्रामीणों में बाबा साहेब को दिखा उत्साह
- बाबा साहब का जीवन हम सभी के लिए एक दीप स्तंभ है, जो आज भी सामाजिक समानता का रास्ता दिखाता है : जिला पंचायत सदस्य

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले के ग्राम गढ़चपा की धरती पर सोमवार को सामाजिक न्याय, समानता व संविधान के प्रतीक बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती श्रद्धाभाव से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की गई, जहां उपस्थित जनसमूह ने बाबा साहब अमर रहें के नारों के साथ उन्हें

अम्बेडकर जयंती मनाते ग्रामीण

श्रद्धांजलि अर्पित की। भारतीय संविधान के निमार्ता व सामाजिक क्रांति के अग्रदूत बाबा साहब के विचारों को स्मरण करते हुए वक्ताओं ने उनके संघर्षों को नमन किया। जिला पंचायत सदस्य व प्रधान प्रतिनिधि अरुण सिंह बघेल उर्फ मिंटू सिंह ने कहा कि बाबा साहब का जीवन हम सभी के लिए एक दीप स्तंभ है, जो आज भी सामाजिक समानता का रास्ता दिखाता है। एक भारत-श्रेष्ठ भारत के निर्माण को बाबा साहब के योगदान को याद करते हुए उपस्थित जनसमूह ने सामाजिक समरसता और न्यायप्रिय समाज की दिशा में काम करने का आह्वान किया। इस मौके पर भीम आर्मी के जिला संयोजक संजय गौतम, लक्ष्मी प्रसाद, वीरेंद्र कुमार, कामता प्रसाद, लल्लू प्रसाद सहित संगठन के सभी कार्यकर्ता विशेष रूप से मौजूद रहे। वक्ताओं ने बाबा साहब की विचारधारा को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प दोहराया।

दीप प्रज्वलन व सहभोज के साथ मनाई गई बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती

बरगढ़ (चित्रकूट)। भारत रत्न, संविधान निमार्ता, समाज सुधारक डॉ भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती के अवसर पर सोमवार को बरगढ़ मंडल अंतर्गत ग्राम सेमरा पनिहई में आयोजित कार्यक्रम श्रद्धा और संकल्प का प्रतीक बन गया। कार्यक्रम की शुरूआत स्थानीय अंबेडकर प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण से हुई। इसके पश्चात सहभोज का आयोजन कर सामाजिक समरसता का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम पर संगठन द्वारा डॉ अंबेडकर की जीवन यात्रा, उनके संघर्षों एवं संविधान निर्माण में उनके योगदान पर आधारित प्रस्तावना को पढ़कर सुनाया गया। वक्ताओं ने बाबा साहेब के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका जीवन समर्पण, संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है। कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित जनसमुदाय ने बाबा साहेब के पदचिन्हों पर चलने और उनके दिखाए मार्ग पर समाज को जागरूक करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संयोजन रामनरेश पाल (मंडल उपाध्यक्ष) ने किया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष श्याम नारायण शुक्ला, मण्डल महामंत्री मनीष सिंह, मंडल उपाध्यक्ष सत्य प्रकाश गौतम एवं विनीत शुक्ला, मंडल मंत्री ओम नारायण त्रिपाठी, अजय वर्मा, भागवत पाल, ग्राम प्रधान सेमरा शिव नरेश पाल सहित दर्जनों की संख्या में स्थानीय ग्रामीणजन शामिल हुए।

बाबा साहेब की जयंती मनाते अनुयायी

कराची से क्वेटा जाने वाली ट्रेन को बलूचिस्तान में नहीं मिला प्रवेश, यात्रियों को स्टेशन पर उतारा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के आर्थिक केंद्र कराची से बलूचिस्तान की प्रांतीय राजधानी क्वेटा जाने वाली एक यात्री ट्रेन को रास्ते में रोक दिया गया और बलूचिस्तान प्रांत में प्रवेश की अनुमति भी नहीं दी गई।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक लगभग 150 यात्रियों को ले जा रही बोलन मेल ट्रेन को सिंध प्रांत के जैकोबाबाद शहर में रोक दिया गया। यहां यात्रियों को उतार दिया गया और ट्रेन को सोमवार तड़के बलूचिस्तान में प्रवेश देने से मना कर दिया गया।

जानकारी के अनुसार, यात्री ट्रेन कराची से रवाना हुई और आधी रात के बाद जैकोबाबाद पहुंची। ट्रेन को रेलवे स्टेशन पर रोक दिया गया। रेलवे अधिकारियों को सूचित किया गया कि सुरक्षा मंजूरी मिलने तक आगे की आवाजाही की अनुमति नहीं दी जाएगी। ट्रेन में कई सरकारी अधिकारी, सुरक्षाकर्मी और उनके परिवार सवार थे।

सुरक्षा सूत्रों ने बताया कि खुफिया एजेंसियों ने ट्रेन पर योजनाबद्ध तरीके से अपहरण और हमले की चेतावनी दी थी ठीक वैसे ही जैसा

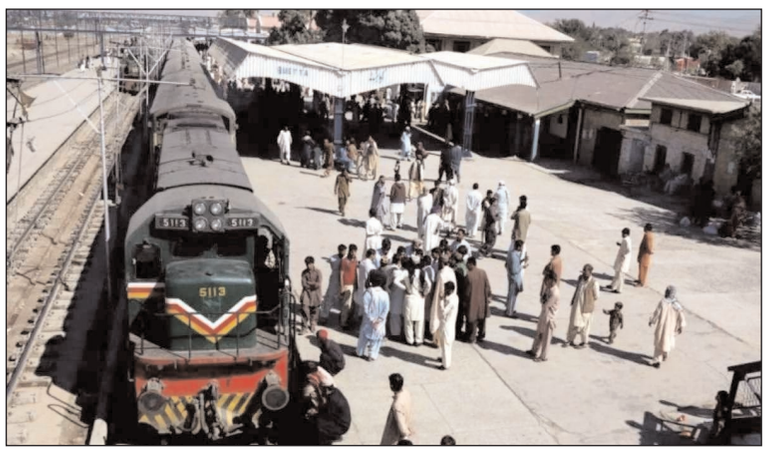

11 मार्च को जाफर एक्सप्रेस ट्रेन का अपहरण किया गया था।

अधिकांश यात्रियों को सिब्बी ले जाया गया, जहां से उन्होंने कराची लौटने के लिए स्थानीय परिवहन सेवाओं का इस्तेमाल किया। पाकिस्तान रेलवे अधिकारियों ने यात्रियों से कराची से जैकोबाबाद तक का किराया वसूला और क्वेटा तक की यात्रा के लिए ली गई अतिरिक्त राशि वापस कर दी।

जैकबाबाद में यात्रियों को अचानक उतारने की वजह से कई यात्री रेलवे स्टेशन पर फंसे रहे, क्योंकि उन्हें न तो पानी मिला और न ही बिजली। बताया जा रहा है कि भीषण गर्मी और स्टेशन पर पानी की अनुपलब्धता के कारण कुछ बच्चे बेहोश भी हो गए।

पाकिस्तान रेलवे के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) आमिर अली बलूच ने कहा, "क्वेटा जाने वाली बोलन मेल को घंटों तक रक्षा कारणों से रोका गया क्योंकि बलूचिस्तान में रात के समय ट्रेन परिचालन की अनुमति नहीं थी। ट्रेन में करीब 150 यात्री सवार थे।" उन्होंने कहा, "ट्रेन की आगे की यात्रा स्थगित कर दी गई और यात्रियों को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के तहत बसों के माध्यम से क्वेटा और अन्य स्थानों पर भेज दिया गया।" प्रतिबंधित बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के आतंकवादियों ने बलूचिस्तान के बोलन दर्रे पर जाफर एक्सप्रेस यात्री ट्रेन पर हमला किया और उसे हाईजैक कर लिया, जिसमें करीब 400 यात्री बंधक बन गए। इसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच 48 घंटे तक संघर्ष हुआ। जवाबी कार्रवाई के दौरान 346 यात्रियों को बचाया गया, 21 लोगों की जान चली गई और 33 बीएलए आतंकवादी मारे गए।

रूस ने उतार दी अपनी सेना, भारत भी तैयार!

अफगानिस्तान

अफगानिस्तान में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए भारत कूदा और उसके बाद भारत और चीन को अफगानिस्तान में रोकने के लिए अमेरिका कूद पड़ा। मगर अब अमेरिका को आने से रोकने के लिए रूस ने भी अपनी सेना अफगानिस्तान की सीमा पर बैठा दी है। दरअसल, ये सारा बवाल दुनिया के सबसे स्ट्रेटजिक एयर बेस में से एक बगराम एयरबेस में कब्जे के लिए हो रहा है।

भारत के पड़ोसी देश अफगानिस्तान में हलचल मच गई है। अफगानिस्तान की सीमा पर रूस ने अपनी सेना भेज दी है। रूस की सेना ने तजाकिस्तान के साथ मिलकर अफगानिस्तान की सीमा पर जबरदस्त युद्धाभ्यास शुरू कर दिया है। इस युद्धाभ्यास में ड्रोन, टैंक, 24 हेलीकॉप्टर सहित कई खतरनाक सैन्य उपकरण मैदान में उतार दिए गए हैं। लेकिन अचानक ऐसा क्या हुआ है कि रूस को अफगानिस्तान के पास अपनी सेना भेजनी पड़ गयी है। लेकिन अचानक ऐसा क्या हुआ है कि अफगानिस्तान के पास रूस को अपनी सेना भेजनी पड़ गई है और क्या भारत अफगानिस्तान में आने वाले तूफान से निपटने के लिए तैयार है? अफगानिस्तान में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए भारत कूदा और उसके बाद भारत और चीन को अफगानिस्तान में रोकने के लिए अमेरिका कूद पड़ा। मगर अब अमेरिका को आने से रोकने के लिए रूस ने भी अपनी सेना अफगानिस्तान की सीमा पर बैठा दी है। दरअसल, ये सारा बवाल दुनिया के सबसे स्ट्रेटजिक एयर बेस में से एक बगराम एयरबेस में कब्जे के लिए हो रहा है। अफगानिस्तान के बगराम एयरबेस भारत के बेहद नजदीक है। बगराम एयरबेस से भारत, रूस, चीन, ईरान पाकिस्तान, सेंट्रल एशिया और यहां तक कि यूरोप पर भी नजर रखी जा सकती है। रणनीति के हिसाब से ये दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण इलाकों में से एक है। 2021 में अमेरिकी सेना के अफगानिस्तान छोड़ने के बाद चीन बगराम एयरबेस पर कब्जे की कोशिश में लगा हुआ है क्योंकि चीन बगराम एयरबेस के पास ही अपनी एक न्यूक्लियर फैसिलिटी बना रहा है।

यून की पेशी, अदालत के बाहर जमा हुए पूर्व राष्ट्रपति के समर्थक और विरोधी

सोल। दक्षिण कोरिया के पूर्व राष्ट्रपति यून सुक योल के समर्थक और विरोधी सोमवार को सोल की सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के बाहर जमा हुए। यून यहां एक आपराधिक मामले की पहली सुनवाई में शामिल होने आए थे। यह मामला पिछले साल उनके मार्शल लॉ लागू करने की घोषणा से जुड़ा है।

करीब 20 लोग जो यून के समर्थक थे, सुबह 9 बजे से ही कोर्ट के सामने इकट्ठा हो गए। उन्होंने दक्षिण कोरिया और अमेरिका के झंडे लहराए और 'यून फिर से' जैसे नारे लगाए। कुछ लोगों ने जोर-जोर से कहा, 'राष्ट्रपति दोषी नहीं हैं।'

योनहाप समाचार एजेंसी के मुताबिक, कोर्ट के गेट के सामने वाली सड़क पर एक बैनर लगा था, जिसमें यून के केस के मुख्य जज की तारीफ की गई थी।

सुबह 9:50 बजे यून को लेकर एक कार कोर्ट में पहुंची। उन्हें देखकर उनके समर्थक काफी जोश में आ गए।

इसी दौरान, यून के विरोधियों का एक समूह कोर्ट के पास इकट्ठा हुआ। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूर्व राष्ट्रपति को फिर से गिरफ्तार करने और उन्हें सख्त सजा देने की मांग की।

सोल की सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में यून के खिलाफ बगावत के आरोपों पर सोमवार को सुनवाई होनी है। योनहाप न्यूज एजेंसी के मुताबिक, यून को इस केस में आरोपी के तौर पर कोर्ट में मौजूद रहना जरूरी है। यून ऐसे पांचवें पूर्व राष्ट्रपति हैं जिन्हें आपराधिक मामले का सामना करना पड़

रहा है।

जनवरी में यून को गिरफ्तार किया गया और उन पर आपराधिक विद्रोह का आरोप लगाया गया। लेकिन, पिछले महीने सोल कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी को रद्द कर दिया और उन्हें बिना जेल में रखे मुकदमा चलाने की अनुमति दी, जिसके बाद उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

बता दें राष्ट्रपति यून ने 03 दिसंबर की रात को दक्षिण कोरिया में आपातकालीन मार्शल लॉ की घोषणा की, लेकिन संसद द्वारा इसके खिलाफ मतदान किए जाने के बाद इसे निरस्त कर दिया गया। मार्शल लॉ कुछ घंटों के लिए ही लागू रहा लेकिन इसने देश की राजनीति को हिला कर रख दिया।

नेशनल असेंबली ने राष्ट्रपति यून सुक-योल के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पारित किया। संवैधानिक न्यायालय ने पिछले दिनों उनके खिलाफ महाभियोग को जारी रखा जिसके बाद उन्हें पद छोड़ना पड़ा।

बांग्लादेश के अंतरिम सरकार का दिमाग घूम गया है? भारत के बाद इजरायल से ले रहा पंगा

बांग्लादेश

बांग्लादेश ने अपने नागरिकों के इजरायल की यात्रा करने पर ही पूरी तरह से रोक लगा दी है। सबसे बड़ी बात ये कि बांग्लादेश ने ये रोक कई नोटिफिकेशन जारी करके नहीं बल्कि पासपोर्ट पर ही लिख दिया है कि इजरायल छोड़कर ये पासपोर्ट दुनिया में कहीं भी लागू होगा। यानी इस पासपोर्ट का इस्तेमाल करने वाले बांग्लादेशी नागरिक इजरायल नहीं जा पाएंगे।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का माथा पूरी तरह से घूम चुका है। जो मन में आ रहा है फैसला लेकर बांग्लादेश पूरी दुनिया में अपने आप को पाकिस्तान पसंदीदा देश बनाने पर तुल चुका है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार इस वक्त हर वो चीज कर रही है जो पाकिस्तान को खुश कर सके। अब बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने ऐसा फैसला लिया है। जिसके बाद वो सिर्फ भारत से ही नहीं बल्कि इजरायल से भी दुश्मनी मोल ले चुका है। बांग्लादेश ने अपने नागरिकों के इजरायल की यात्रा करने पर ही पूरी तरह से रोक लगा दी है।

2025 ओसाका विश्व एक्सपो का चाइना पैवेलियन आधिकारिक तौर पर खुला

बीजिंग। जापान में 2025 ओसाका वर्ल्ड एक्सपो 13 अप्रैल से 13 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। इस एक्सपो में सबसे बड़े और सबसे प्रतिनिधित्व वाले पैवेलियनों में से एक के रूप में, चाइना पैवेलियन 13 अप्रैल को आधिकारिक तौर पर खोला गया।

उस दिन, चाइना पैवेलियन का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें चीनी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संवर्धन परिषद के अध्यक्ष रन होंगपिन, अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी ब्यूरो के अध्यक्ष एलेन बर्गर और अन्य चीनी एवं विदेशी अतिथियों के साथ-साथ जापानी सरकार, व्यापार, संस्कृति और संबंधित चीनी एवं जापानी कॉपोरेट प्रतिनिधियों तथा समाचार मीडिया के लोगों सहित लगभग 300 लोगों ने भाग लिया।

चाइना पैवेलियन लगभग 3,500 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और ओसाका विश्व एक्सपो में सबसे बड़े विदेशी निर्मित पैवेलियनों में से एक है, जिसकी थीम "मानव और प्रकृति के बीच जीवन समुदाय का सहनिर्माण- हरित विकास का भावी समाज" पर आधारित है। चाइना पैवेलियन में तीन मुख्य प्रदर्शनी क्षेत्र बनाए गए हैं, जिनके नाम हैं - "मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य", "हरा पानी और हरे पहाड़", और "अंतहीन जीवन"। बताया गया है कि चाइना पैवेलियन 5,000 से अधिक वर्षों की चीनी सभ्यता द्वारा पोषित पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को प्रदर्शित करता है, नए युग में हरित विकास की अवधारणाओं और उपलब्धियों का प्रदर्शन करता है, और चीन द्वारा विश्व के अन्य देशों के साथ मिलकर मानव और प्रकृति के बीच जीवन समुदाय का निर्माण करने की सुंदर परिकल्पना प्रस्तुत करता है।

गाजा में तुरंत खत्म हो युद्ध : इजरायल के भीतर उठी आवाज, पूर्व खुफिया अधिकारियों का नेतन्याहू को पत्र

यरूशलम। इजरायल की मोसाद खुफिया एजेंसी के 250 से अधिक पूर्व अधिकारियों ने सरकार से गाजा पट्टी में युद्ध को तुरंत समाप्त करने की अपील की। इजरायल के सरकारी स्वामित्व वाले कान टीवी न्यूज के मुताबिक पूर्व अधिकारियों ने सरकार को पत्र लिखकर यह मांग की।

रिपोर्ट के अनुसार, हस्ताक्षरकताओं में मोसाद के तीन पूर्व प्रमुख डैनी याटोम, एफ्रेम हेलेवी और तामीर पार्डो के साथ-साथ दर्जनों अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हैं।

मोसाद के पूर्व सदस्यों ने कहा, "लगातार लड़ाई बंधकों और हमारे सैनिकों के जीवन को खतरे में डाल रही है। इस पीड़ा को समाप्त करने वाले समझौते तक पहुंचने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। हम सरकार से साहसी फैसला लेने और देश की सुरक्षा के लिए जिम्मेदारी से काम करने की अपील करते हैं।"

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, उन्होंने उन सैकड़ों सैन्य कर्मियों, [चाहे वे रिजर्व में हों या रिटायरमेंट], के प्रति समर्थन व्यक्त किया जिन्होंने इसी तरह के पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। पत्र में युद्ध समाप्त करने और बंधकों की वापसी की अपील की गई थी।

गुरुवार को एयरक्रू सदस्यों के पत्र

के प्रकाशन के बाद, इजरायली वायु सेना कमांडर टोमर बार ने हस्ताक्षरकताओं में शामिल सक्रिय रिजर्विस्टों की सेवा समाप्त करने का फैसला लिया।

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बर्खास्तगी के फैसले का समर्थन किया और ऐसे पत्रों की निंदा की। उन्होंने हस्ताक्षरकताओं को 'एक चरमपंथी हाशिए का समूह कहा, जो 'इजरायली समाज को अंदर से तोड़ने' की कोशिश कर रहा है।

पत्र की प्रति प्रकाशित करने वाले कई मीडिया आउटलेट्स के अनुसार, रविवार को लगभग 200 इजरायली सैन्य डॉक्टरों ने लड़ाई रोकने और बंधकों को घर वापस लाने की मांग के साथ एक याचिका पर हस्ताक्षर किए।

इसमें कहा गया, "गाजा में जारी लड़ाई का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक और व्यक्तिगत हितों की पूर्ति करना है, इसका कोई सुरक्षा उद्देश्य नहीं है, इससे सैनिकों और बंधकों का जीवन खतरे में पड़ रहा है।"

हमास ने 7 अक्टूबर, 2023 को दक्षिणी इजरायल पर हमला करके 251 लोगों को बंधक बना लिया। वर्तमान में, 59 इजरायली बंधक गाजा में हैं, जिनमें से 24 के अभी भी जीवित होने का अनुमान है।

जनवरी में इजरायल और हमास ने बंधकों के लिए तीन चरणों में संघर्ष विराम पर सहमति जताई थी। हालांकि, छह सप्ताह का पहला चरण 1 मार्च को समाप्त होने के बाद दूसरे दौर की बातचीत में गतिरोध पैदा हो गया। इसके बाद इजरायल ने युद्धविराम गतिरोध के बीच 18 मार्च को गाजा में सैन्य अभियान फिर से शुरू कर दिया।

इजरायली हवाई हमले के बाद गाजा अस्पताल को करना पड़ा बंद

गाजा/यरूशलम। फिलिस्तीनी चिकित्सा सूत्रों और प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, रविवार तड़के गाजा शहर के अल-अहली अरब अस्पताल पर इजरायली हवाई हमला हुआ। इस हमले में प्रमुख चिकित्सा सुवि?धाओं को नुकसान पहुंचा और अस्पताल को बंद करना पड़ा।

समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायली सेना ने कहा कि हमले का लक्ष्य अस्पताल

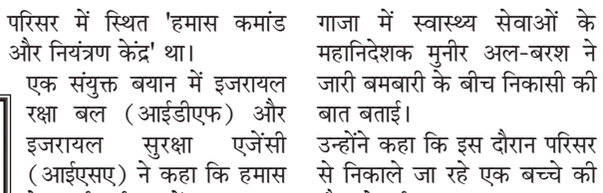

परिसर में स्थित 'हमास कमांड और नियंत्रण केंद्र' था।

एक संयुक्त बयान में इजरायल रक्षा बल (आईडीएफ) और इजरायल सुरक्षा एजेंसी (आईएसए) ने कहा कि हमास के कार्यकर्ता हमलों का समन्वय करने के लिए अस्पताल का उपयोग कर रहे हैं।

नाम न बताने की शर्त पर मेडिकल स्टाफ के एक सदस्य ने शिन्हुआ को बताया कि हमले से कुछ समय पहले ही इजरायली सेना ने निकासी की चेतावनी जारी की थी।

यह हमला अस्पताल के सर्जिकल ऑपरेशन विभाग और ऑक्सीजन उत्पादन इकाई पर हुआ, जिससे अस्पताल के कई हिस्सों में गंभीर क्षति हुई।

कर्मचारी ने कहा कि हमले में दोनों विभाग नष्ट हो गए और अस्पताल अब काम नहीं कर सकता। हमले से पहले इस अस्पताल में मरीजों, घायल नागरिकों और सैकड़ों विस्थापित निवासियों को आश्रय दिया जा रहा था।

गाजा में स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशक मुनीर अल-बरश ने जारी बमबारी के बीच निकासी की बात बताई।

उन्होंने कहा कि इस दौरान परिसर से निकाले जा रहे एक बच्चे की मौत हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि लोगों की निकासी धुएं, आग और गिरते मलबे के बीच हुई।

इजरायली सेना ने कहा कि उसने नागरिकों और चिकित्सा कर्मचारियों के लिए जोखिम को कम करने के लिए हमले से पहले सटीक निर्देशित हथियारों का इस्तेमाल किया और हवाई निगरानी की। यह भी कहा गया कि क्षेत्र में पहले से ही चेतावनी जारी कर दी गई थी।

गाजा में हमास द्वारा संचालित सरकारी मीडिया कार्यालय ने हमले की निंदा की। इसे 'युद्ध अपराध' बताते हुए इजरायल और अमेरिका को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया। इसने दावा किया कि यह हमला गाजा के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के खिलाफ व्यापक अभियान का हिस्सा था।

शी जिनपिंग की बेटी को अमेरिका से बाहर निकालेंगे ट्रंप

अमेरिका

अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के बढ़ने के साथ, मेगा कार्यकताओं ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे चीनी छात्रों पर कार्रवाई करने के लिए दबाव डाला। पिछले कुछ दिनों में सैकड़ों छात्रों ने अपने छात्र वीजा खो दिए हैं क्योंकि ट्रम्प प्रशासन पिछले साल परिसरों में हुए इजरायल विरोधी प्रदर्शनों से जुड़े छात्रों को निशाना बना रहा है। दुनिया की दो सबसे बड़ी ताकतें अमेरिका और चीन आमने सामने हैं। ये लड़ाई अब केवल ट्रेड वॉर तक सीमित नहीं रही। ये लड़ाई अब निजी रिश्तों तक पहुंच चुकी है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की बेटी मिंगजे को अमेरिका से डिपोर्ट करने की तैयारी कर रहे हैं। इस बीच जवाबी कार्यवाही में चीन ने सभी हॉलीवुड फिल्मों को अपने देश में बैन कर दिया है।

डोनाल्ड ट्रंप ने पहले तो सत्ता संभालने के साथ ही चीन पर बड़े पैमाने पर टैरिफ लगाना शुरू कर दिया। चीन ने भी जवाब में अमेरिकी सामानों पर भारी टैरिफ लगा दिए। देखते ही देखते दोनों देश एक दूसरे पर 125 प्रतिशत से ज्यादा के टैरिफ लगा चुके हैं।

आईसीसी ने विस्थापित अफगान महिला क्रिकेटरों के लिए समर्पित टास्क फोर्स की घोषणा की

दुबई। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने रविवार को विस्थापित अफगान महिला क्रिकेटरों की सहायता के लिए एक समर्पित टास्क फोर्स के गठन की घोषणा की। एक ऐतिहासिक पहल में, आईसीसी ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई), इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) और क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के साथ हाथ मिलाया है ताकि इन प्रतिभाशाली एथलीटों को उनके क्रिकेट और व्यक्तिगत विकास दोनों में सहायता मिल सके। इस पहल के हिस्से के रूप में, आईसीसी प्रत्यक्ष मौद्रिक सहायता प्रदान करने के लिए एक समर्पित कोष स्थापित करेगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि इन क्रिकेटरों के पास अपने पसंदीदा खेल को जारी रखने

के लिए आवश्यक संसाधन हों।

इसके साथ ही एक मजबूत उच्च प्रदर्शन कार्यक्रम भी होगा जिसमें उन्नत कोचिंग, विश्व स्तरीय सुविधाएं और उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करने के लिए अनुकूलित मेंटरशिप प्रदान की जाएगी।

इस पहल पर टिप्पणी करते हुए, आईसीसी के चेयरमैन जय शाह ने कहा, "अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद में, हम समावेशिता को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने के लिए गहराई से प्रतिबद्ध हैं कि हर क्रिकेटर को अपनी परिस्थितियों की परवाह किए बिना चमकने का अवसर मिले। अपने मूल्यवान भागीदारों के सहयोग से, हमें इस टास्क फोर्स और सहायता कोष को लॉन्च करने पर गर्व है, जो एक व्यापक उच्च प्रदर्शन कार्यक्रम द्वारा पूरित है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विस्थापित अफगान महिला क्रिकेटर खेल में अपनी यात्रा जारी रख सकें। "यह पहल क्रिकेट के वैश्विक विकास और एकता, लचीलापन और आशा को प्रेरित करने की इसकी शक्ति के प्रति हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता को दशार्ती है।" आईसीसी का मानना है कि यह पहल न केवल अफगान महिला क्रिकेटरों के खेल करियर को बनाए रखने में मदद करेगी, बल्कि सीमाओं और प्रतिकूलताओं से परे एक एकीकृत शक्ति के रूप में खेल की भूमिका को भी मजबूत करेगी।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।